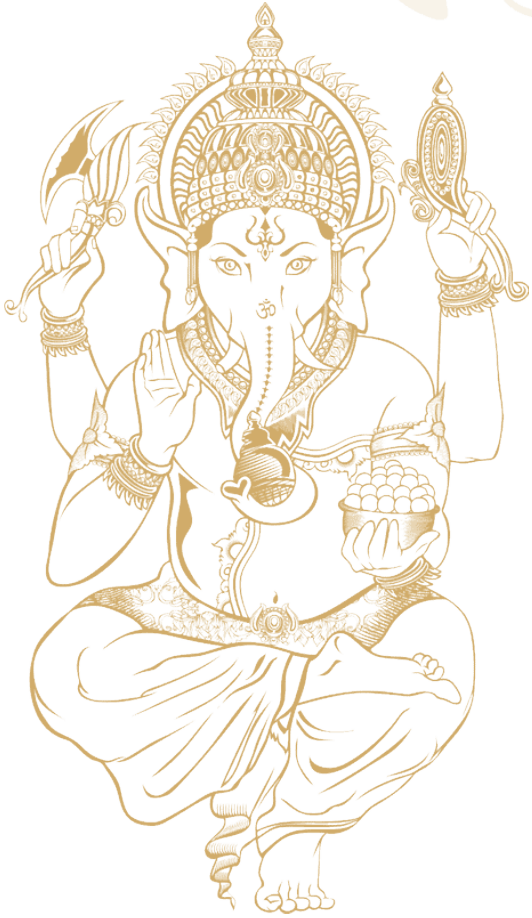

Mr.

Ms.

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग
पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
14/03/2001	जन्म तिथि	11/10/1999
बुधवार	दिन	सोमवार
घंटे 06:54:00	जन्म समय	22:57:00 घंटे
घटी 01:11:14	जन्म समय(घटी)	42:01:17 घटी
India	देश	India
Hyderabad	स्थान	Chennai
17:22:00 उत्तर	अक्षांश	13:05:00 उत्तर
78:26:00 पूर्व	रेखांश	80:18:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:16:16	स्थानिक संस्कार	-00:08:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:25:30	सूर्योदय	05:58:54
18:25:45	सूर्यास्त	17:52:23
23:52:09	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:59

मीन	लग्न	मिथुन
गुरु	लग्न लग्नाधिपति	बुध
तुला	राशि	तुला
शुक्र	राशि-स्वामी	शुक्र
विशाखा	नक्षत्र	स्वाति
गुरु	नक्षत्र स्वामी	राहु
3	चरण	4
हर्षण	योग	प्रीति
तैतिल	करण	तैतिल
ते-तेजवन्त	जन्म नामाक्षर	ता-तनुजा
मीन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला
शूद्र	वर्ण	शूद्र
मानव	वश्य	मानव
व्याघ्र	योनि	महिष
राक्षस	गण	देव
अन्त्य	नाड़ी	अन्त्य
सर्प	वर्ग	सर्प

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 7वर्ष 8मा 4दि		07:36:12	मीन	लग्न	मिथु	13:09:54	राहु 0वर्ष 5मा 19दि	
शनि		29:39:26	कुंभ	सूर्य	कन्या	24:06:03	शनि	
16/11/2008		26:56:06	तुला	चंद्र	तुला	19:39:05	31/03/2016	
17/11/2027		19:27:40	वृश्चि	मंगल	धनु	02:19:20	01/04/2035	
शनि	20/11/2011	02:22:48	कुंभ	बुध	तुला	15:21:49	शनि	04/04/2019
बुध	30/07/2014	10:54:10	वृष	गुरु व	मेष	07:40:58	बुध	12/12/2021
केतु	08/09/2015	23:20:23	मीन व	शुक्र	सिंह	09:14:27	केतु	21/01/2023
शुक्र	08/11/2018	02:15:18	वृष	शनि व	मेष	21:48:41	शुक्र	23/03/2026
सूर्य	21/10/2019	18:41:16	मिथु व	राहु व	कर्क	16:32:21	सूर्य	05/03/2027
चन्द्र	21/05/2021	18:41:16	धनु व	केतु व	मक	16:32:21	चन्द्र	03/10/2028
मंगल	30/06/2022	28:46:02	मक	हर्ष व	मक	19:04:04	मंगल	12/11/2029
राहु	06/05/2025	14:01:32	मक	नेप व	मक	07:44:21	राहु	18/09/2032
गुरु	17/11/2027	21:24:20	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	14:39:35	गुरु	01/04/2035

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

23:52:09 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:59

लग्न-चलित

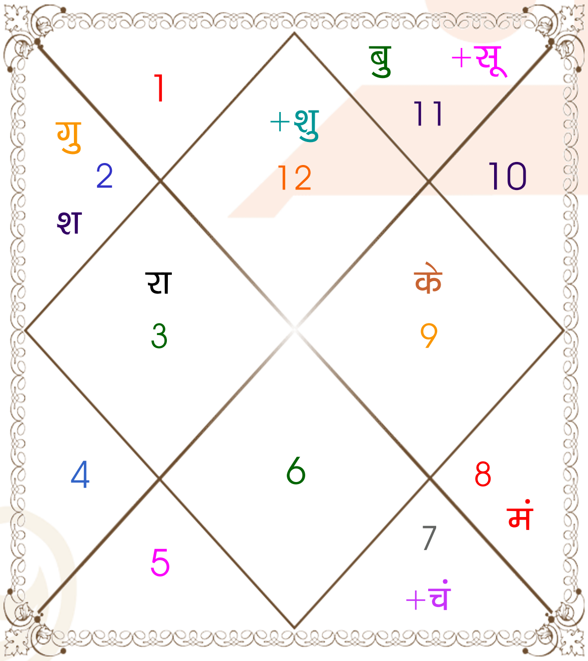

लग्न-चलित

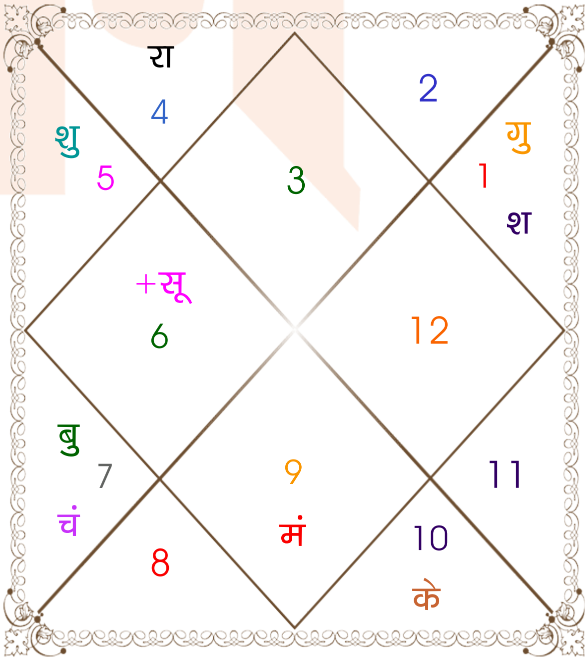

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चन्द्र कुंडली

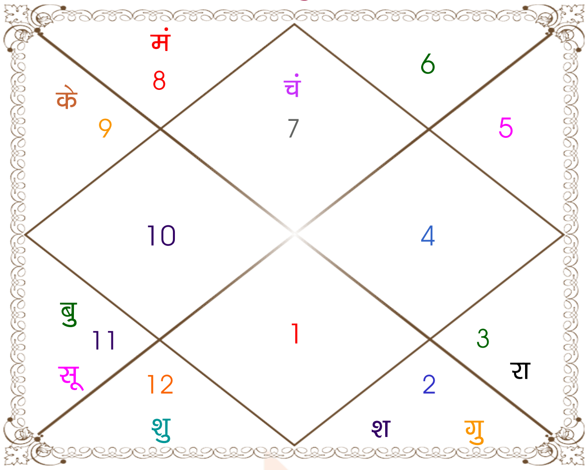

चन्द्र कुंडली

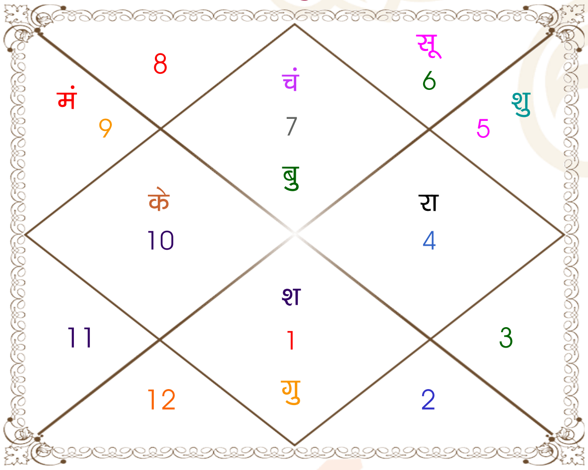

सूर्य कुंडली

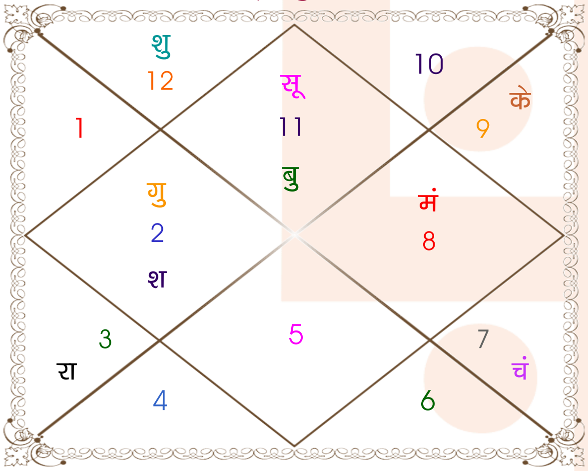

सूर्य कुंडली

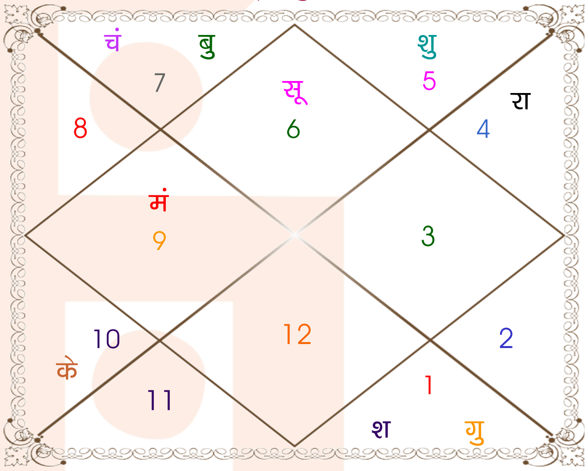

नवमांश कुंडली

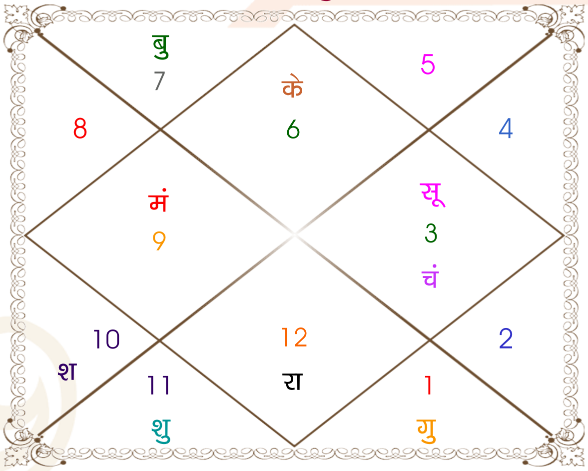

नवमांश कुंडली

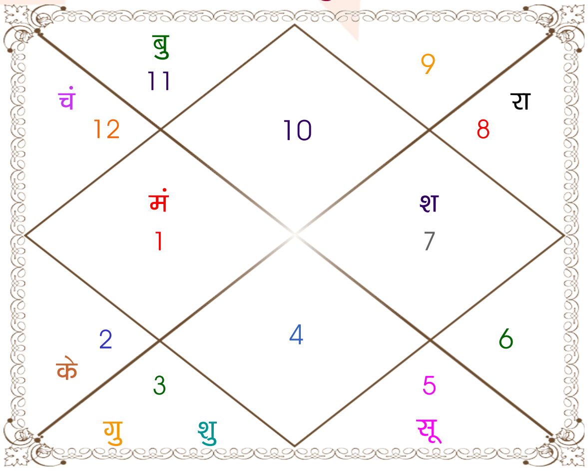

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : गुरु 7 वर्ष 6 मास 21 दिन

के.पी. अयनांश : 23:46:10

फॉरच्युना : वृश्चिक 04:58:51

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	29:45:25	शनि	गुरु	चंद्र	राहु
चंद्र		तुला	27:02:05	शुक्र	गुरु	शुक्र	सूर्य
मंगल		वृश्चि	19:33:39	मंगल	बुध	शुक्र	शुक्र
बुध		कुंभ	02:28:47	शनि	मंगल	केतु	शनि
गुरु		वृष	11:00:09	शुक्र	चंद्र	चंद्र	शुक्र
शुक्र	व	मीन	23:26:21	गुरु	बुध	मंगल	राहु
शनि		वृष	02:21:17	शुक्र	सूर्य	गुरु	शुक्र
राहु	व	मिथु	18:47:15	बुध	राहु	चंद्र	बुध
केतु	व	धनु	18:47:15	गुरु	शुक्र	राहु	शनि
हर्ष		मक	28:52:01	शनि	मंगल	शनि	शुक्र
नेप		मक	14:07:31	शनि	चंद्र	गुरु	गुरु
प्लूटो		वृश्चि	21:30:19	मंगल	बुध	शुक्र	केतु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मीन	07:42:11	गुरु	शनि	केतु	राहु
2	मेष	12:37:43	मंगल	केतु	बुध	राहु
3	वृष	11:38:29	शुक्र	चंद्र	मंगल	केतु
4	मिथु	07:18:07	बुध	राहु	राहु	शनि
5	कर्क	03:05:14	चंद्र	गुरु	राहु	चंद्र
6	सिंह	02:26:40	सूर्य	केतु	शुक्र	शनि
7	कन्या	07:42:11	बुध	सूर्य	केतु	बुध
8	तुला	12:37:43	शुक्र	राहु	बुध	बुध
9	वृश्चि	11:38:29	मंगल	शनि	चंद्र	शनि
10	धनु	07:18:07	गुरु	केतु	राहु	चंद्र
11	मक	03:05:14	शनि	सूर्य	शनि	शनि
12	कुंभ	02:26:40	शनि	मंगल	केतु	शनि

भाव कुंडली

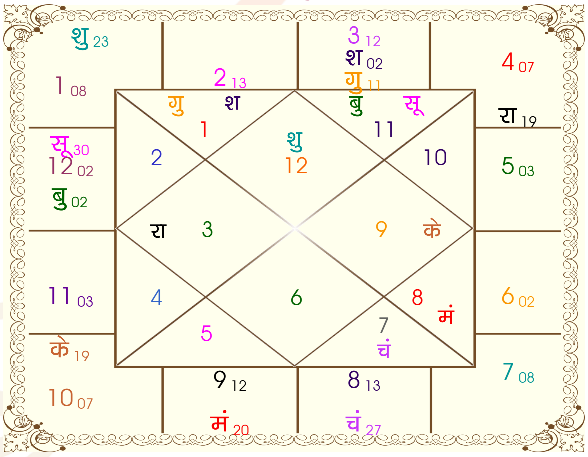

भोग्य दशा काल : राहु 0 वर्ष 4 मास 0 दिन

के.पी. अयनांश : 23:44:59

फॉरच्युना : कर्क 08:48:57

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कन्या	24:12:03	बुध	मंगल	राहु	राहु
चंद्र		तुला	19:45:05	शुक्र	राहु	मंगल	केतु
मंगल		धनु	02:25:21	गुरु	केतु	शुक्र	शनि
बुध		तुला	15:27:49	शुक्र	राहु	शुक्र	शुक्र
गुरु	व	मेष	07:46:59	मंगल	केतु	गुरु	गुरु
शुक्र		सिंह	09:20:28	सूर्य	केतु	शनि	शनि
शनि	व	मेष	21:54:42	मंगल	शुक्र	शनि	शनि
राहु	व	कर्क	16:38:21	चंद्र	शनि	गुरु	राहु
केतु	व	मक	16:38:21	शनि	चंद्र	शनि	शुक्र
हर्ष	व	मक	19:10:05	शनि	चंद्र	बुध	गुरु
नेप	व	मक	07:50:21	शनि	सूर्य	शुक्र	शुक्र
प्लूटो		वृश्चि	14:45:35	मंगल	शनि	राहु	चंद्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मिथु	13:15:55	बुध	राहु	बुध	सूर्य
2	कर्क	09:01:36	चंद्र	शनि	शुक्र	राहु
3	सिंह	06:58:51	सूर्य	केतु	राहु	शुक्र
4	कन्या	08:19:42	बुध	सूर्य	शुक्र	चंद्र
5	तुला	11:29:45	शुक्र	राहु	शनि	शुक्र
6	वृश्चि	13:28:35	मंगल	शनि	राहु	शनि
7	धनु	13:15:55	गुरु	केतु	बुध	शनि
8	मक	09:01:36	शनि	सूर्य	शुक्र	गुरु
9	कुंभ	06:58:51	शनि	राहु	राहु	गुरु
10	मीन	08:19:42	गुरु	शनि	शुक्र	शुक्र
11	मेष	11:29:45	मंगल	केतु	बुध	बुध
12	वृष	13:28:35	शुक्र	चंद्र	राहु	शुक्र

भाव कुंडली

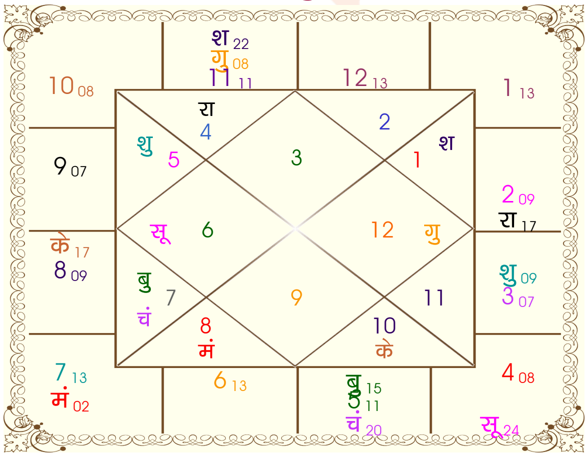

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- चंद्र- गुरु- शुक्र, केतु,
2	सूर्य, चंद्र, मंगल- बुध- गुरु, शनि,
3	शुक्र- केतु-
4	मंगल- बुध- शुक्र- राहु+
5	चंद्र- गुरु-
6	सूर्य- शनि-
7	मंगल- बुध- शुक्र-
8	चंद्र, गुरु, शुक्र- केतु-
9	मंगल, बुध+
10	सूर्य- चंद्र- गुरु- केतु,
11	शनि-
12	सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि+

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	बुध-
2	चंद्र+ बुध, राहु, केतु-
3	सूर्य- शुक्र, शनि,
4	सूर्य, बुध-
5	चंद्र, बुध, शुक्र- शनि- केतु,
6	सूर्य+ मंगल,
7	गुरु-
8	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि- राहु- केतु,
9	शनि- राहु-
10	गुरु,
11	सूर्य- मंगल- शनि, राहु,
12	शुक्र- शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 2, 6- 10- 12,
चंद्र	1- 2, 5- 8, 10-
मंगल	2- 4- 7- 9, 12,
बुध	2- 4- 7- 9+ 12,
गुरु	1- 2, 5- 8, 10-
शुक्र	1, 3- 4- 7- 8- 12,
शनि	2, 6- 11- 12+
राहु	4+
केतु	1, 3- 8- 10,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3- 4, 6+ 11-
चंद्र	2+ 5,
मंगल	6, 8, 11-
बुध	1- 2, 4- 5,
गुरु	7- 8, 10,
शुक्र	3, 5- 8, 12-
शनि	3, 5- 8- 9- 11, 12-
राहु	2, 8- 9- 11,
केतु	2- 5, 8,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	राहु
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	राहु
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	मंगल

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

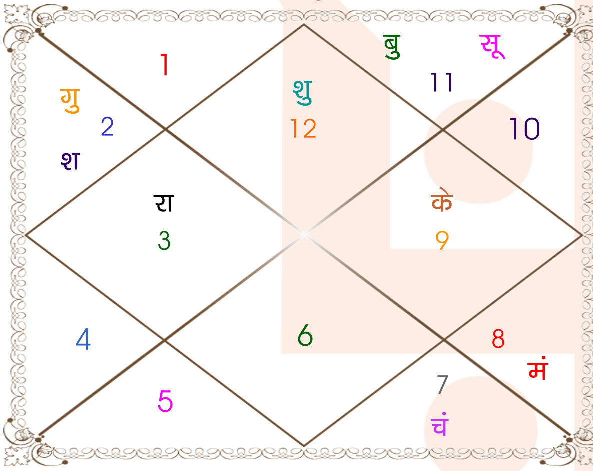

देह विचारः

लग्न कुंडली

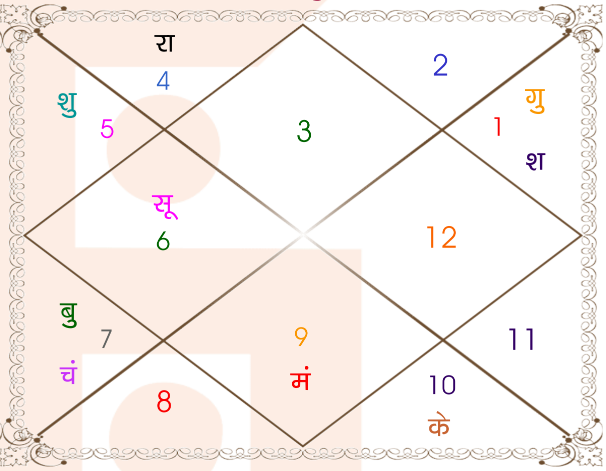

देह विचारः

होरा कुंडली

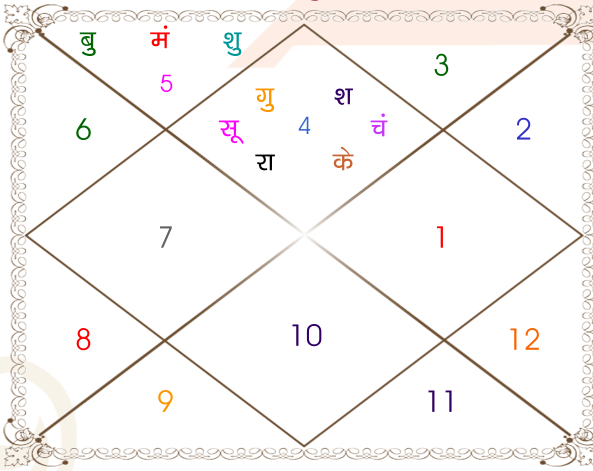

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

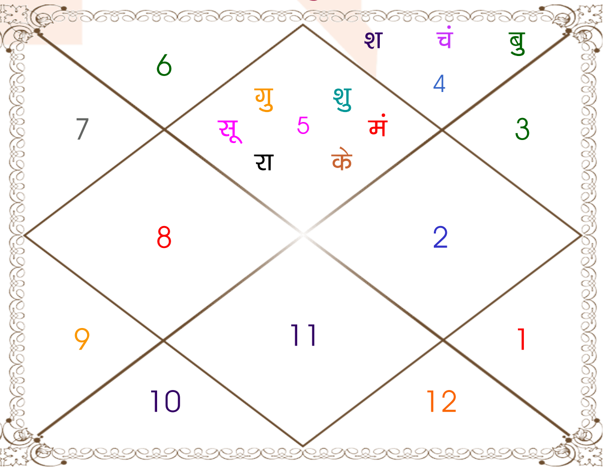

सम्पदाविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

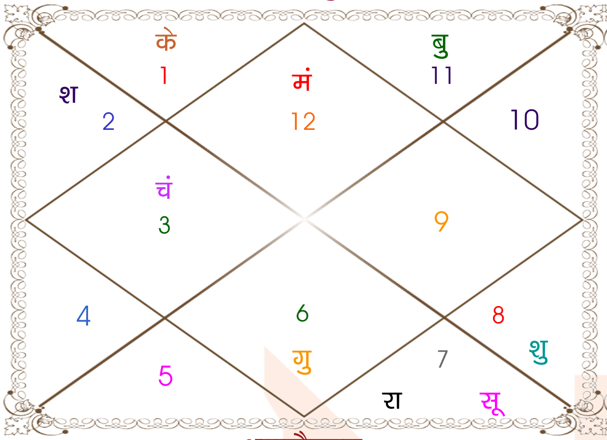

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

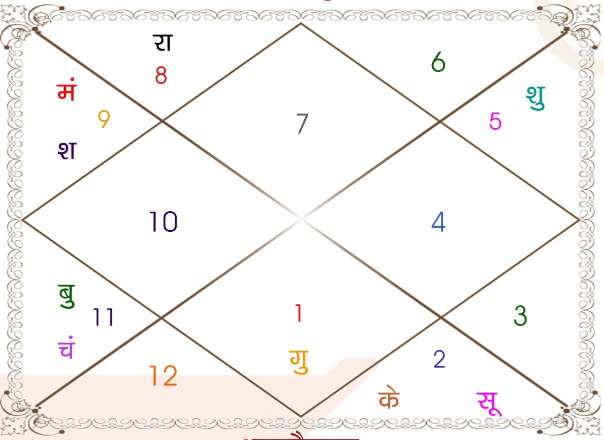

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

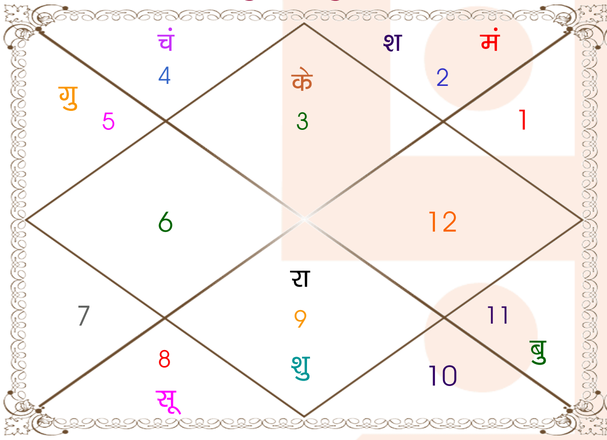

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

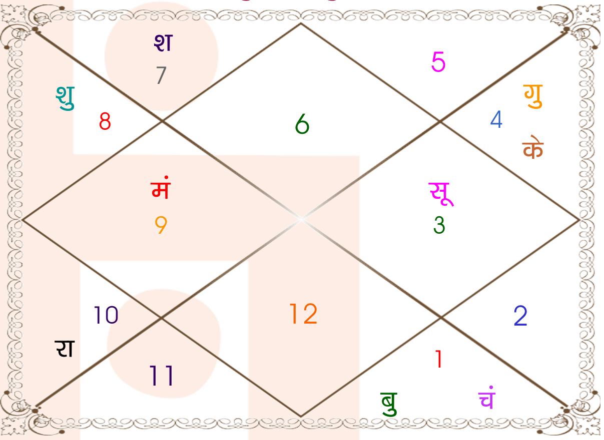

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

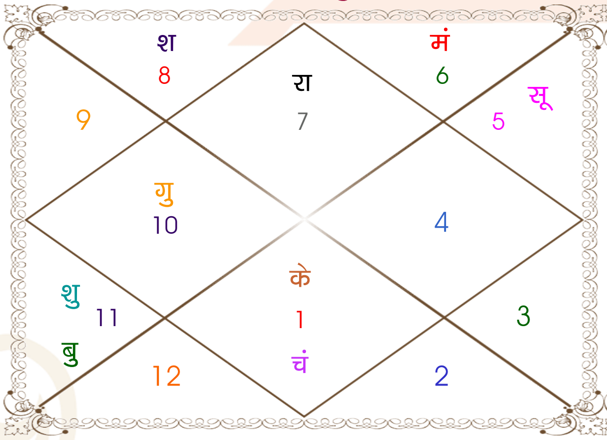

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

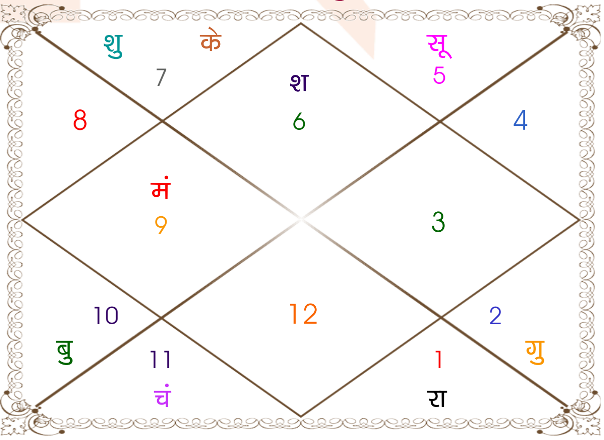

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

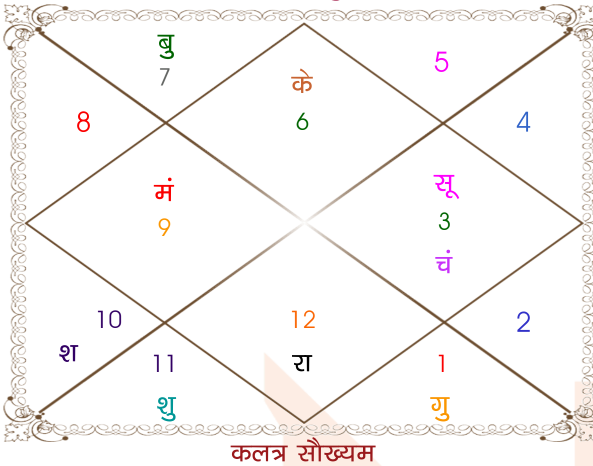

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

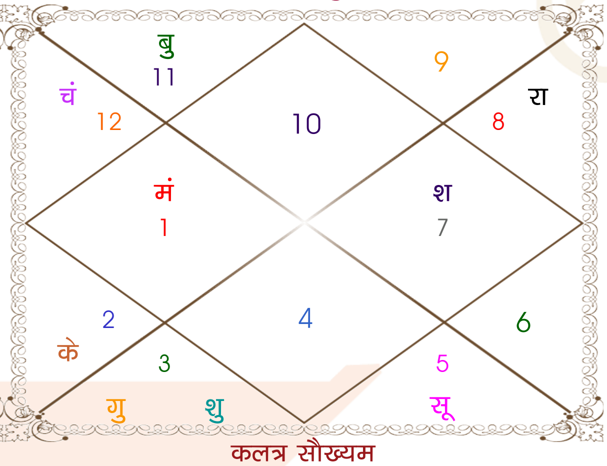

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

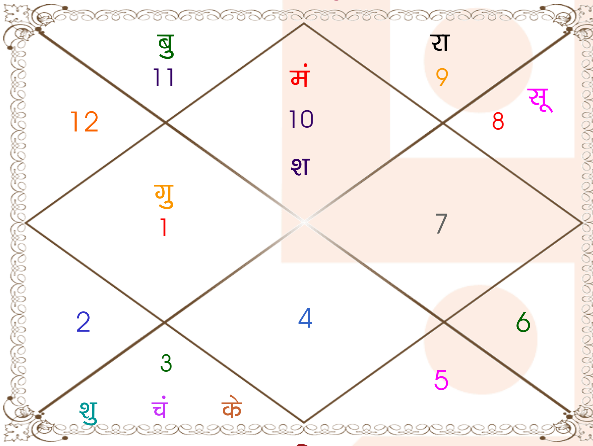

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

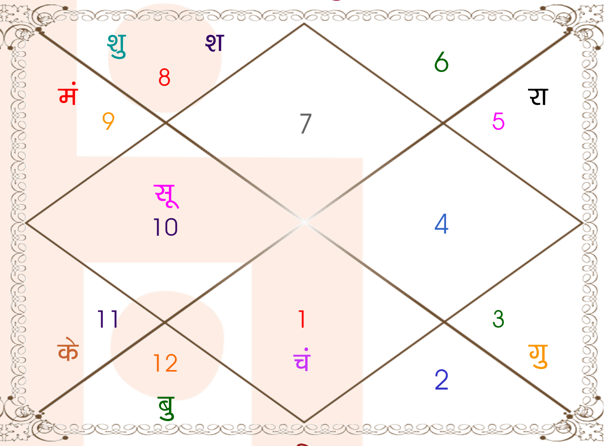

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

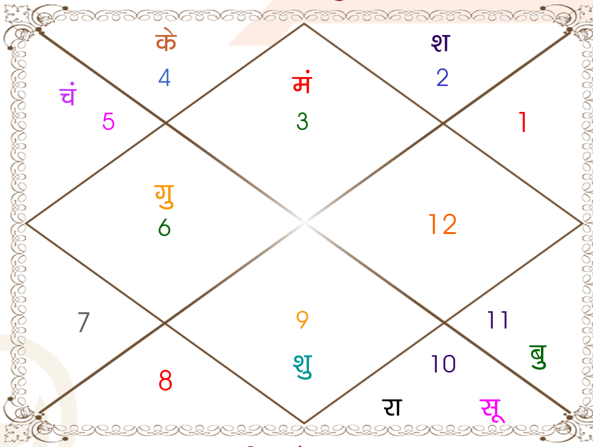

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

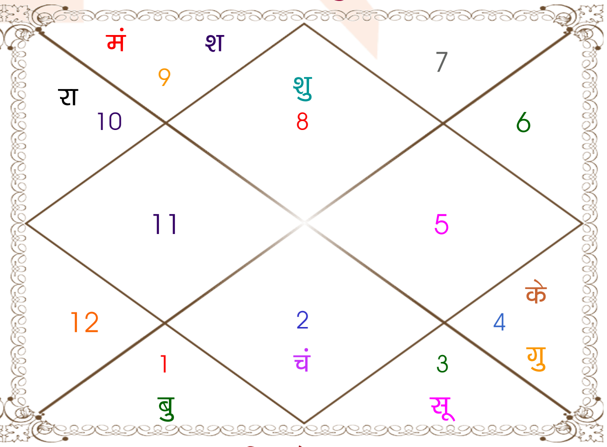

पितृसौख्यम

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

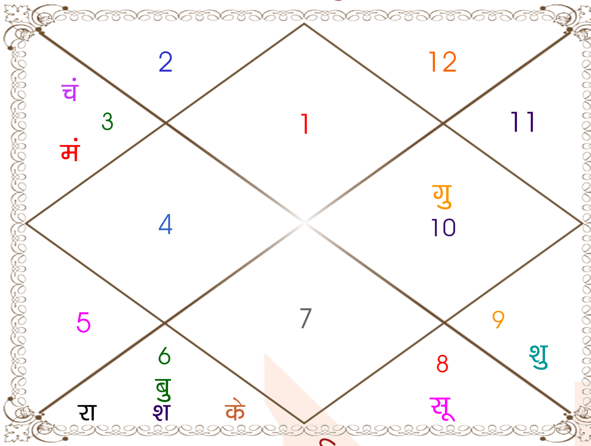

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

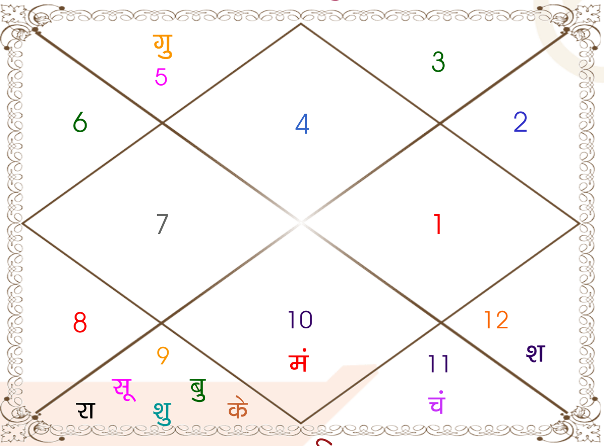

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

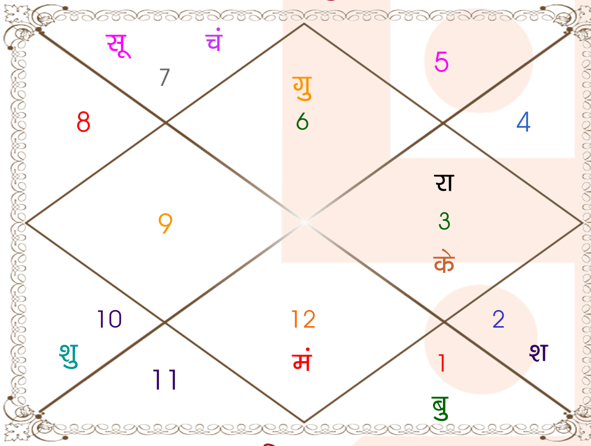

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

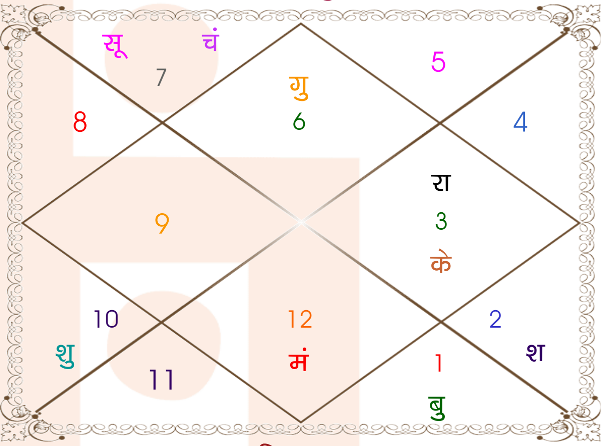

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

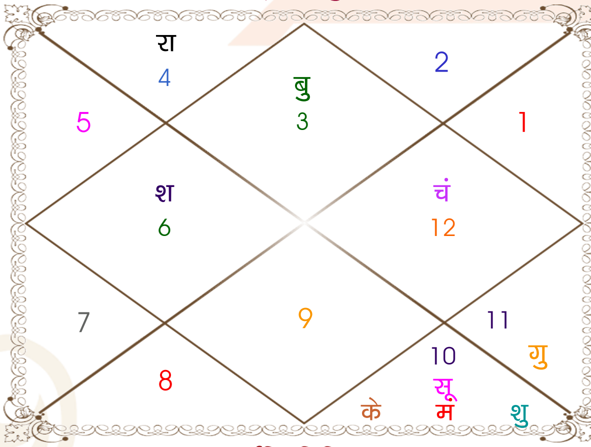

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

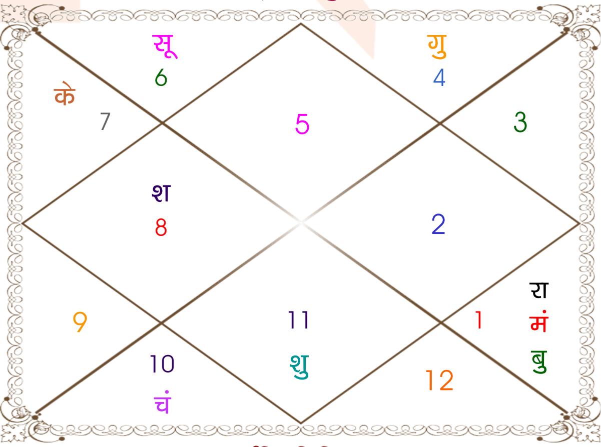

सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - Mr.

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	---	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - Ms.

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	सम
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	---

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	5	4	1	4	4	3	6	4	3	4	6	4	48

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
सूर्य	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
चंद्र	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
मंगल	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
बुध	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	1	7
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	3
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
कुल	3	3	3	6	5	5	3	2	6	3	4	5	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	6
शुक्र	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	7
बुध	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
कुल	2	4	7	3	2	4	4	4	4	4	6	5	49

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	6
चंद्र	1	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	6
मंगल	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8
गुरु	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	7
शुक्र	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	7
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
कुल	7	3	3	4	5	2	5	4	3	3	6	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	7
गुरु	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
कुल	3	6	3	4	4	3	3	3	2	5	1	2	39

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
सूर्य	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	5
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
बुध	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	4
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
शनि	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	7
कुल	2	0	4	4	3	2	2	3	4	5	4	6	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
कुल	3	5	4	4	6	5	4	1	5	5	6	6	54

बुध का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	5
चंद्र	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	6
मंगल	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
बुध	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
कुल	3	3	4	6	5	5	4	5	4	5	4	6	54

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

गुरु का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
लग्न	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
कुल	4	5	5	6	4	3	7	6	2	5	4	5	56

गुरु का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
सूर्य	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	9
चंद्र	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	5
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
बुध	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
शुक्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	6
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
कुल	5	3	8	5	3	5	5	5	4	4	4	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
मंगल	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	9
लग्न	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
कुल	4	4	3	4	5	2	5	5	3	6	7	4	52

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
सूर्य	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	0	0	3
चंद्र	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	9
मंगल	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	6
बुध	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	1	5
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	9
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
कुल	4	3	5	3	8	3	4	5	5	4	6	2	52

शनि का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	2	1	2	5	5	4	2	4	4	2	6	2	39

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
मंगल	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
बुध	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	6
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	3
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
कुल	3	2	5	3	5	6	2	2	2	1	3	5	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	3	6	2	5	5	4	3	5	4	4	3	49

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
सूर्य	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
चंद्र	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
मंगल	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
बुध	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
कुल	4	3	3	5	6	4	4	4	5	3	4	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

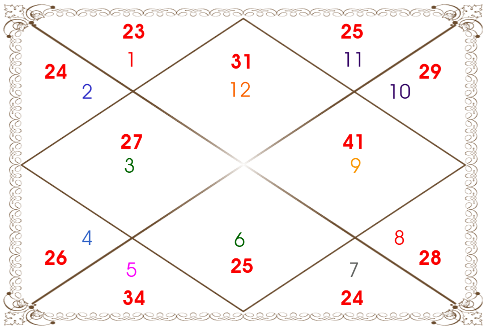

सर्वाष्टकवर्ग

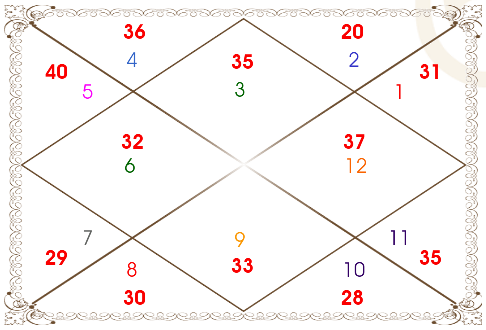

Mr.

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	1	2	5	5	4	2	4	4	2	6	39
गुरु	5	4	5	5	6	4	3	7	6	2	5	4	56
मंगल	3	3	3	2	5	1	2	3	6	3	4	4	39
सूर्य	1	4	4	3	6	4	3	4	6	4	5	4	48
शुक्र	4	3	4	5	2	5	5	3	6	7	4	4	52
बुध	4	4	6	5	4	1	5	5	6	6	3	5	54
चंद्र	4	4	4	4	6	5	2	4	7	3	2	4	49
बिन्दु	23	24	27	26	34	25	24	28	41	29	25	31	337
रेखा	33	32	29	30	22	31	32	28	15	27	31	25	335

Ms.

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	4	3	3	5	6	4	4	4	5	3	4	4	49
सूर्य	3	3	3	6	5	5	3	2	6	3	4	5	48
चंद्र	7	3	3	4	5	2	5	4	3	3	6	4	49
मंगल	2	0	4	4	3	2	2	3	4	5	4	6	39
बुध	3	3	4	6	5	5	4	5	4	5	4	6	54
गुरु	5	3	8	5	3	5	5	5	4	4	4	5	56
शुक्र	4	3	5	3	8	3	4	5	5	4	6	2	52
शनि	3	2	5	3	5	6	2	2	2	1	3	5	39
बिन्दु	31	20	35	36	40	32	29	30	33	28	35	37	386
रेखा	33	44	29	28	24	32	35	34	31	36	29	27	382

शोध्य पिंड - Mr.

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	136	57	111	111	89	98	130
ग्रह पिंड	35	15	72	55	74	12	53
शोध्य पिंड	171	72	183	166	163	110	183

शोध्य पिंड - Ms.

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	56	84	78	98	53	61	101	123
ग्रह पिंड	37	48	94	33	32	58	36	61
शोध्य पिंड	93	132	172	131	85	119	137	184

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

गुरु 7 वर्ष 8 मास 4 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
14/03/2001		16/11/2008		17/11/2027	
16/11/2008		17/11/2027		16/11/2044	
	00/00/0000	शनि	20/11/2011	बुध	15/04/2030
	00/00/0000	बुध	30/07/2014	केतु	12/04/2031
	00/00/0000	केतु	08/09/2015	शुक्र	10/02/2034
	14/03/2001	शुक्र	08/11/2018	सूर्य	17/12/2034
शुक्र	30/05/2003	सूर्य	21/10/2019	चंद्र	18/05/2036
सूर्य	18/03/2004	चंद्र	21/05/2021	मंगल	15/05/2037
चंद्र	18/07/2005	मंगल	30/06/2022	राहु	02/12/2039
मंगल	24/06/2006	राहु	06/05/2025	गुरु	09/03/2042
राहु	16/11/2008	गुरु	17/11/2027	शनि	16/11/2044

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
16/11/2044		17/11/2051		17/11/2071	
17/11/2051		17/11/2071		16/11/2077	
केतु	14/04/2045	शुक्र	18/03/2055	सूर्य	06/03/2072
शुक्र	14/06/2046	सूर्य	18/03/2056	चंद्र	04/09/2072
सूर्य	20/10/2046	चंद्र	16/11/2057	मंगल	10/01/2073
चंद्र	21/05/2047	मंगल	17/01/2059	राहु	05/12/2073
मंगल	18/10/2047	राहु	16/01/2062	गुरु	23/09/2074
राहु	04/11/2048	गुरु	16/09/2064	शनि	05/09/2075
गुरु	11/10/2049	शनि	17/11/2067	बुध	11/07/2076
शनि	20/11/2050	बुध	17/09/2070	केतु	16/11/2076
बुध	17/11/2051	केतु	17/11/2071	शुक्र	16/11/2077

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
16/11/2077		17/11/2087		17/11/2094	
17/11/2087		17/11/2094		17/11/2112	
चंद्र	17/09/2078	मंगल	14/04/2088	राहु	30/07/2097
मंगल	18/04/2079	राहु	03/05/2089	गुरु	23/12/2099
राहु	17/10/2080	गुरु	09/04/2090	शनि	30/10/2102
गुरु	16/02/2082	शनि	18/05/2091	बुध	19/05/2105
शनि	17/09/2083	बुध	15/05/2092	केतु	06/06/2106
बुध	16/02/2085	केतु	11/10/2092	शुक्र	06/06/2109
केतु	17/09/2085	शुक्र	11/12/2093	सूर्य	01/05/2110
शुक्र	18/05/2087	सूर्य	18/04/2094	चंद्र	31/10/2111
सूर्य	17/11/2087	चंद्र	17/11/2094	मंगल	17/11/2112

राहु 0 वर्ष 5 मास 19 दिन

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
11/10/1999		31/03/2000		31/03/2016	
31/03/2000		31/03/2016		01/04/2035	
	00/00/0000	गुरु	20/05/2002	शनि	04/04/2019
	00/00/0000	शनि	30/11/2004	बुध	12/12/2021
	00/00/0000	बुध	08/03/2007	केतु	21/01/2023
	00/00/0000	केतु	12/02/2008	शुक्र	23/03/2026
	00/00/0000	शुक्र	13/10/2010	सूर्य	05/03/2027
	00/00/0000	सूर्य	01/08/2011	चंद्र	03/10/2028
	00/00/0000	चंद्र	30/11/2012	मंगल	12/11/2029
	11/10/1999	मंगल	06/11/2013	राहु	18/09/2032
मंगल	31/03/2000	राहु	31/03/2016	गुरु	01/04/2035

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
01/04/2035		31/03/2052		01/04/2059	
31/03/2052		01/04/2059		01/04/2079	
बुध	28/08/2037	केतु	28/08/2052	शुक्र	01/08/2062
केतु	25/08/2038	शुक्र	28/10/2053	सूर्य	01/08/2063
शुक्र	25/06/2041	सूर्य	05/03/2054	चंद्र	01/04/2065
सूर्य	01/05/2042	चंद्र	04/10/2054	मंगल	01/06/2066
चंद्र	01/10/2043	मंगल	02/03/2055	राहु	01/06/2069
मंगल	27/09/2044	राहु	19/03/2056	गुरु	31/01/2072
राहु	16/04/2047	गुरु	23/02/2057	शनि	01/04/2075
गुरु	22/07/2049	शनि	04/04/2058	बुध	30/01/2078
शनि	31/03/2052	बुध	01/04/2059	केतु	01/04/2079

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
01/04/2079		01/04/2085		01/04/2095	
01/04/2085		01/04/2095		02/04/2102	
सूर्य	20/07/2079	चंद्र	30/01/2086	मंगल	28/08/2095
चंद्र	18/01/2080	मंगल	31/08/2086	राहु	15/09/2096
मंगल	25/05/2080	राहु	01/03/2088	गुरु	22/08/2097
राहु	19/04/2081	गुरु	01/07/2089	शनि	01/10/2098
गुरु	05/02/2082	शनि	30/01/2091	बुध	28/09/2099
शनि	18/01/2083	बुध	01/07/2092	केतु	24/02/2100
बुध	25/11/2083	केतु	30/01/2093	शुक्र	26/04/2101
केतु	31/03/2084	शुक्र	01/10/2094	सूर्य	01/09/2101
शुक्र	01/04/2085	सूर्य	01/04/2095	चंद्र	02/04/2102

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
06/05/2025		17/11/2027		15/04/2030		23/03/2026		05/03/2027		03/10/2028	
17/11/2027		15/04/2030		12/04/2031		05/03/2027		03/10/2028		12/11/2029	
गुरु	06/09/2025	बुध	21/03/2028	केतु	06/05/2030	सूर्य	09/04/2026	चंद्र	22/04/2027	मंगल	27/10/2028
शनि	31/01/2026	केतु	11/05/2028	शुक्र	05/07/2030	चंद्र	08/05/2026	मंगल	26/05/2027	राहु	26/12/2028
बुध	11/06/2026	शुक्र	04/10/2028	सूर्य	23/07/2030	मंगल	28/05/2026	राहु	20/08/2027	गुरु	18/02/2029
केतु	04/08/2026	सूर्य	17/11/2028	चंद्र	22/08/2030	राहु	19/07/2026	गुरु	06/11/2027	शनि	23/04/2029
शुक्र	05/01/2027	चंद्र	30/01/2029	मंगल	13/09/2030	गुरु	04/09/2026	शनि	05/02/2028	बुध	20/06/2029
सूर्य	20/02/2027	मंगल	22/03/2029	राहु	06/11/2030	शनि	29/10/2026	बुध	27/04/2028	केतु	13/07/2029
चंद्र	08/05/2027	राहु	01/08/2029	गुरु	24/12/2030	बुध	17/12/2026	केतु	31/05/2028	शुक्र	19/09/2029
मंगल	01/07/2027	गुरु	26/11/2029	शनि	19/02/2031	केतु	06/01/2027	शुक्र	04/09/2028	सूर्य	09/10/2029
राहु	17/11/2027	शनि	15/04/2030	बुध	12/04/2031	शुक्र	05/03/2027	सूर्य	03/10/2028	चंद्र	12/11/2029

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
12/04/2031		10/02/2034		17/12/2034		12/11/2029		18/09/2032		01/04/2035	
10/02/2034		17/12/2034		18/05/2036		18/09/2032		01/04/2035		28/08/2037	
शुक्र	01/10/2031	सूर्य	25/02/2034	चंद्र	29/01/2035	राहु	17/04/2030	गुरु	19/01/2033	बुध	04/08/2035
सूर्य	22/11/2031	चंद्र	23/03/2034	मंगल	28/02/2035	गुरु	03/09/2030	शनि	15/06/2033	केतु	24/09/2035
चंद्र	16/02/2032	मंगल	10/04/2034	राहु	17/05/2035	शनि	15/02/2031	बुध	24/10/2033	शुक्र	18/02/2036
मंगल	17/04/2032	राहु	27/05/2034	गुरु	25/07/2035	बुध	12/07/2031	केतु	17/12/2033	सूर्य	02/04/2036
राहु	19/09/2032	गुरु	07/07/2034	शनि	15/10/2035	केतु	11/09/2031	शुक्र	20/05/2034	चंद्र	14/06/2036
गुरु	04/02/2033	शनि	25/08/2034	बुध	27/12/2035	शुक्र	02/03/2032	सूर्य	05/07/2034	मंगल	04/08/2036
शनि	18/07/2033	बुध	08/10/2034	केतु	26/01/2036	सूर्य	23/04/2032	चंद्र	20/09/2034	राहु	14/12/2036
बुध	11/12/2033	केतु	26/10/2034	शुक्र	22/04/2036	चंद्र	19/07/2032	मंगल	13/11/2034	गुरु	11/04/2037
केतु	10/02/2034	शुक्र	17/12/2034	सूर्य	18/05/2036	मंगल	18/09/2032	राहु	01/04/2035	शनि	28/08/2037

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
18/05/2036		15/05/2037		02/12/2039		28/08/2037		25/08/2038		25/06/2041	
15/05/2037		02/12/2039		09/03/2042		25/08/2038		25/06/2041		01/05/2042	
मंगल	08/06/2036	राहु	01/10/2037	गुरु	22/03/2040	केतु	18/09/2037	शुक्र	13/02/2039	सूर्य	10/07/2041
राहु	01/08/2036	गुरु	03/02/2038	शनि	31/07/2040	शुक्र	17/11/2037	सूर्य	06/04/2039	चंद्र	05/08/2041
गुरु	18/09/2036	शनि	30/06/2038	बुध	25/11/2040	सूर्य	05/12/2037	चंद्र	01/07/2039	मंगल	23/08/2041
शनि	15/11/2036	बुध	09/11/2038	केतु	12/01/2041	चंद्र	05/01/2038	मंगल	31/08/2039	राहु	09/10/2041
बुध	05/01/2037	केतु	02/01/2039	शुक्र	30/05/2041	मंगल	26/01/2038	राहु	02/02/2040	गुरु	19/11/2041
केतु	26/01/2037	शुक्र	07/06/2039	सूर्य	11/07/2041	राहु	21/03/2038	गुरु	19/06/2040	शनि	08/01/2042
शुक्र	27/03/2037	सूर्य	23/07/2039	चंद्र	18/09/2041	गुरु	08/05/2038	शनि	30/11/2040	बुध	20/02/2042
सूर्य	15/04/2037	चंद्र	09/10/2039	मंगल	05/11/2041	शनि	05/07/2038	बुध	26/04/2041	केतु	11/03/2042
चंद्र	15/05/2037	मंगल	02/12/2039	राहु	09/03/2042	बुध	25/08/2038	केतु	25/06/2041	शुक्र	01/05/2042

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि	केतु - केतु	केतु - शुक्र	बुध - चंद्र	बुध - मंगल	बुध - राहु
09/03/2042	16/11/2044	14/04/2045	01/05/2042	01/10/2043	27/09/2044
16/11/2044	14/04/2045	14/06/2046	01/10/2043	27/09/2044	16/04/2047
शनि 12/08/2042	केतु 25/11/2044	शुक्र 24/06/2045	चंद्र 13/06/2042	मंगल 22/10/2043	राहु 14/02/2045
बुध 29/12/2042	शुक्र 20/12/2044	सूर्य 16/07/2045	मंगल 14/07/2042	राहु 15/12/2043	गुरु 18/06/2045
केतु 24/02/2043	सूर्य 27/12/2044	चंद्र 20/08/2045	राहु 29/09/2042	गुरु 02/02/2044	शनि 12/11/2045
शुक्र 07/08/2043	चंद्र 09/01/2045	मंगल 14/09/2045	गुरु 07/12/2042	शनि 30/03/2044	बुध 24/03/2046
सूर्य 25/09/2043	मंगल 17/01/2045	राहु 17/11/2045	शनि 27/02/2043	बुध 20/05/2044	केतु 18/05/2046
चंद्र 16/12/2043	राहु 09/02/2045	गुरु 13/01/2046	बुध 11/05/2043	केतु 10/06/2044	शुक्र 20/10/2046
मंगल 12/02/2044	गुरु 01/03/2045	शनि 21/03/2046	केतु 11/06/2043	शुक्र 10/08/2044	सूर्य 05/12/2046
राहु 08/07/2044	शनि 24/03/2045	बुध 21/05/2046	शुक्र 05/09/2043	सूर्य 28/08/2044	चंद्र 21/02/2047
गुरु 16/11/2044	बुध 14/04/2045	केतु 14/06/2046	सूर्य 01/10/2043	चंद्र 27/09/2044	मंगल 16/04/2047

केतु - सूर्य	केतु - चंद्र	केतु - मंगल	बुध - गुरु	बुध - शनि	केतु - केतु
14/06/2046	20/10/2046	21/05/2047	16/04/2047	22/07/2049	31/03/2052
20/10/2046	21/05/2047	18/10/2047	22/07/2049	31/03/2052	28/08/2052
सूर्य 21/06/2046	चंद्र 07/11/2046	मंगल 30/05/2047	गुरु 05/08/2047	शनि 25/12/2049	केतु 09/04/2052
चंद्र 02/07/2046	मंगल 19/11/2046	राहु 21/06/2047	शनि 14/12/2047	बुध 13/05/2050	शुक्र 04/05/2052
मंगल 09/07/2046	राहु 21/12/2046	गुरु 11/07/2047	बुध 09/04/2048	केतु 10/07/2050	सूर्य 11/05/2052
राहु 28/07/2046	गुरु 19/01/2047	शनि 04/08/2047	केतु 27/05/2048	शुक्र 20/12/2050	चंद्र 24/05/2052
गुरु 14/08/2046	शनि 22/02/2047	बुध 25/08/2047	शुक्र 12/10/2048	सूर्य 08/02/2051	मंगल 02/06/2052
शनि 03/09/2046	बुध 24/03/2047	केतु 03/09/2047	सूर्य 23/11/2048	चंद्र 30/04/2051	राहु 24/06/2052
बुध 22/09/2046	केतु 05/04/2047	शुक्र 28/09/2047	चंद्र 31/01/2049	मंगल 27/06/2051	गुरु 14/07/2052
केतु 29/09/2046	शुक्र 11/05/2047	सूर्य 05/10/2047	मंगल 20/03/2049	राहु 21/11/2051	शनि 06/08/2052
शुक्र 20/10/2046	सूर्य 21/05/2047	चंद्र 18/10/2047	राहु 22/07/2049	गुरु 31/03/2052	बुध 28/08/2052

केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि	केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - चंद्र
18/10/2047	04/11/2048	11/10/2049	28/08/2052	28/10/2053	05/03/2054
04/11/2048	11/10/2049	20/11/2050	28/10/2053	05/03/2054	04/10/2054
राहु 14/12/2047	गुरु 19/12/2048	शनि 14/12/2049	शुक्र 07/11/2052	सूर्य 03/11/2053	चंद्र 22/03/2054
गुरु 03/02/2048	शनि 11/02/2049	बुध 09/02/2050	सूर्य 28/11/2052	चंद्र 14/11/2053	मंगल 04/04/2054
शनि 04/04/2048	बुध 01/04/2049	केतु 05/03/2050	चंद्र 02/01/2053	मंगल 21/11/2053	राहु 06/05/2054
बुध 28/05/2048	केतु 21/04/2049	शुक्र 11/05/2050	मंगल 27/01/2053	राहु 10/12/2053	गुरु 03/06/2054
केतु 20/06/2048	शुक्र 16/06/2049	सूर्य 01/06/2050	राहु 01/04/2053	गुरु 27/12/2053	शनि 07/07/2054
शुक्र 23/08/2048	सूर्य 03/07/2049	चंद्र 04/07/2050	गुरु 28/05/2053	शनि 17/01/2054	बुध 06/08/2054
सूर्य 11/09/2048	चंद्र 01/08/2049	मंगल 28/07/2050	शनि 03/08/2053	बुध 04/02/2054	केतु 18/08/2054
चंद्र 13/10/2048	मंगल 21/08/2049	राहु 27/09/2050	बुध 03/10/2053	केतु 11/02/2054	शुक्र 23/09/2054
मंगल 04/11/2048	राहु 11/10/2049	गुरु 20/11/2050	केतु 28/10/2053	शुक्र 05/03/2054	सूर्य 04/10/2054

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योगिनी दशा

धान्या 1 वर्ष 5 मास 8 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
	14/03/2001		22/08/2002		22/08/2006
	22/08/2002		22/08/2006		22/08/2011
	00/00/0000	भ्राम	31/01/2003	भद्रि	02/05/2007
	00/00/0000	भद्रि	22/08/2003	उल्क	02/03/2008
	00/00/0000	उल्क	21/04/2004	सिद्ध	20/02/2009
	14/03/2001	सिद्ध	30/01/2005	संक	02/04/2010
सिद्ध	21/09/2001	संक	21/12/2005	मंग	22/05/2010
संक	22/05/2002	मंग	31/01/2006	पिंग	01/09/2010
मंग	22/06/2002	पिंग	22/04/2006	धांय	31/01/2011
पिंग	22/08/2002	धांय	22/08/2006	भ्राम	22/08/2011

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
	22/08/2011		21/08/2017		21/08/2024
	21/08/2017		21/08/2024		21/08/2032
उल्क	21/08/2012	सिद्ध	01/01/2019	संक	01/06/2026
सिद्ध	21/10/2013	संक	22/07/2020	मंग	22/08/2026
संक	20/02/2015	मंग	01/10/2020	पिंग	31/01/2027
मंग	22/04/2015	पिंग	20/02/2021	धांय	01/10/2027
पिंग	22/08/2015	धांय	21/09/2021	भ्राम	21/08/2028
धांय	20/02/2016	भ्राम	02/07/2022	भद्रि	01/10/2029
भ्राम	21/10/2016	भद्रि	22/06/2023	उल्क	31/01/2031
भद्रि	21/08/2017	उल्क	21/08/2024	सिद्ध	21/08/2032

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
	21/08/2032		21/08/2033		22/08/2035
	21/08/2033		22/08/2035		22/08/2038
मंग	31/08/2032	पिंग	01/10/2033	धांय	21/11/2035
पिंग	21/09/2032	धांय	01/12/2033	भ्राम	22/03/2036
धांय	21/10/2032	भ्राम	20/02/2034	भद्रि	21/08/2036
भ्राम	01/12/2032	भद्रि	01/06/2034	उल्क	20/02/2037
भद्रि	20/01/2033	उल्क	01/10/2034	सिद्ध	21/09/2037
उल्क	22/03/2033	सिद्ध	20/02/2035	संक	22/05/2038
सिद्ध	01/06/2033	संक	02/08/2035	मंग	22/06/2038
संक	21/08/2033	मंग	22/08/2035	पिंग	22/08/2038

पिंगला 0 वर्ष 0 मास 19 दिन

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
	11/10/1999		31/10/1999		30/10/2002
	31/10/1999		30/10/2002		30/10/2006
	00/00/0000	धांय	30/01/2000	भ्राम	11/04/2003
	00/00/0000	भ्राम	31/05/2000	भद्रि	31/10/2003
	00/00/0000	भद्रि	30/10/2000	उल्क	30/06/2004
	00/00/0000	उल्क	30/04/2001	सिद्ध	10/04/2005
	00/00/0000	सिद्ध	29/11/2001	संक	01/03/2006
	00/00/0000	संक	31/07/2002	मंग	10/04/2006
	11/10/1999	मंग	30/08/2002	पिंग	01/07/2006
मंग	31/10/1999	पिंग	30/10/2002	धांय	30/10/2006

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
	30/10/2006		31/10/2011		30/10/2017
	31/10/2011		30/10/2017		30/10/2024
भद्रि	11/07/2007	उल्क	30/10/2012	सिद्ध	11/03/2019
उल्क	10/05/2008	सिद्ध	30/12/2013	संक	29/09/2020
सिद्ध	30/04/2009	संक	01/05/2015	मंग	09/12/2020
संक	10/06/2010	मंग	01/07/2015	पिंग	30/04/2021
मंग	31/07/2010	पिंग	31/10/2015	धांय	29/11/2021
पिंग	09/11/2010	धांय	30/04/2016	भ्राम	10/09/2022
धांय	11/04/2011	भ्राम	30/12/2016	भद्रि	31/08/2023
भ्राम	31/10/2011	भद्रि	30/10/2017	उल्क	30/10/2024

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
	30/10/2024		30/10/2032		30/10/2033
	30/10/2032		30/10/2033		31/10/2035
संक	10/08/2026	मंग	09/11/2032	पिंग	10/12/2033
मंग	30/10/2026	पिंग	29/11/2032	धांय	09/02/2034
पिंग	11/04/2027	धांय	30/12/2032	भ्राम	01/05/2034
धांय	10/12/2027	भ्राम	08/02/2033	भद्रि	10/08/2034
भ्राम	30/10/2028	भद्रि	31/03/2033	उल्क	10/12/2034
भद्रि	10/12/2029	उल्क	31/05/2033	सिद्ध	01/05/2035
उल्क	11/04/2031	सिद्ध	10/08/2033	संक	10/10/2035
सिद्ध	30/10/2032	संक	30/10/2033	मंग	31/10/2035

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योगिनी दशा

धान्या 1 वर्ष 5 मास 8 दिन

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
22/08/2038		22/08/2042		22/08/2047	
22/08/2042		22/08/2047		21/08/2053	
भ्राम	31/01/2039	भद्रि	02/05/2043	उल्क	21/08/2048
भद्रि	22/08/2039	उल्क	02/03/2044	सिद्ध	21/10/2049
उल्क	21/04/2040	सिद्ध	20/02/2045	संक	20/02/2051
सिद्ध	30/01/2041	संक	02/04/2046	मंग	22/04/2051
संक	21/12/2041	मंग	22/05/2046	पिंग	22/08/2051
मंग	31/01/2042	पिंग	01/09/2046	धांय	20/02/2052
पिंग	22/04/2042	धांय	31/01/2047	भ्राम	21/10/2052
धांय	22/08/2042	भ्राम	22/08/2047	भद्रि	21/08/2053

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
21/08/2053		21/08/2060		21/08/2068	
21/08/2060		21/08/2068		21/08/2069	
सिद्ध	01/01/2055	संक	01/06/2062	मंग	31/08/2068
संक	22/07/2056	मंग	22/08/2062	पिंग	21/09/2068
मंग	01/10/2056	पिंग	31/01/2063	धांय	21/10/2068
पिंग	20/02/2057	धांय	01/10/2063	भ्राम	01/12/2068
धांय	21/09/2057	भ्राम	21/08/2064	भद्रि	20/01/2069
भ्राम	02/07/2058	भद्रि	01/10/2065	उल्क	22/03/2069
भद्रि	22/06/2059	उल्क	31/01/2067	सिद्ध	01/06/2069
उल्क	21/08/2060	सिद्ध	21/08/2068	संक	21/08/2069

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
21/08/2069		22/08/2071		22/08/2074	
22/08/2071		22/08/2074		22/08/2078	
पिंग	01/10/2069	धांय	21/11/2071	भ्राम	31/01/2075
धांय	01/12/2069	भ्राम	22/03/2072	भद्रि	22/08/2075
भ्राम	20/02/2070	भद्रि	21/08/2072	उल्क	21/04/2076
भद्रि	01/06/2070	उल्क	20/02/2073	सिद्ध	30/01/2077
उल्क	01/10/2070	सिद्ध	21/09/2073	संक	21/12/2077
सिद्ध	20/02/2071	संक	22/05/2074	मंग	31/01/2078
संक	02/08/2071	मंग	22/06/2074	पिंग	22/04/2078
मंग	22/08/2071	पिंग	22/08/2074	धांय	22/08/2078

पिंगला 0 वर्ष 0 मास 19 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
31/10/2035		30/10/2038		30/10/2042	
30/10/2038		30/10/2042		31/10/2047	
धांय	30/01/2036	भ्राम	11/04/2039	भद्रि	11/07/2043
भ्राम	31/05/2036	भद्रि	31/10/2039	उल्क	10/05/2044
भद्रि	30/10/2036	उल्क	30/06/2040	सिद्ध	30/04/2045
उल्क	30/04/2037	सिद्ध	10/04/2041	संक	10/06/2046
सिद्ध	29/11/2037	संक	01/03/2042	मंग	31/07/2046
संक	31/07/2038	मंग	10/04/2042	पिंग	09/11/2046
मंग	30/08/2038	पिंग	01/07/2042	धांय	11/04/2047
पिंग	30/10/2038	धांय	30/10/2042	भ्राम	31/10/2047

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
31/10/2047		30/10/2053		30/10/2060	
30/10/2053		30/10/2060		30/10/2068	
उल्क	30/10/2048	सिद्ध	11/03/2055	संक	10/08/2062
सिद्ध	30/12/2049	संक	29/09/2056	मंग	30/10/2062
संक	01/05/2051	मंग	09/12/2056	पिंग	11/04/2063
मंग	01/07/2051	पिंग	30/04/2057	धांय	10/12/2063
पिंग	31/10/2051	धांय	29/11/2057	भ्राम	30/10/2064
धांय	30/04/2052	भ्राम	10/09/2058	भद्रि	10/12/2065
भ्राम	30/12/2052	भद्रि	31/08/2059	उल्क	11/04/2067
भद्रि	30/10/2053	उल्क	30/10/2060	सिद्ध	30/10/2068

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
30/10/2068		30/10/2069		31/10/2071	
30/10/2069		31/10/2071		30/10/2074	
मंग	09/11/2068	पिंग	10/12/2069	धांय	30/01/2072
पिंग	29/11/2068	धांय	09/02/2070	भ्राम	31/05/2072
धांय	30/12/2068	भ्राम	01/05/2070	भद्रि	30/10/2072
भ्राम	08/02/2069	भद्रि	10/08/2070	उल्क	30/04/2073
भद्रि	31/03/2069	उल्क	10/12/2070	सिद्ध	29/11/2073
उल्क	31/05/2069	सिद्ध	01/05/2071	संक	31/07/2074
सिद्ध	10/08/2069	संक	10/10/2071	मंग	30/08/2074
संक	30/10/2069	मंग	31/10/2071	पिंग	30/10/2074

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

5	मूलांक	2
2	भाग्यांक	4
3, 5, 9, 2	मित्र अंक	2, 7, 8, 4
4, 8	शत्रु अंक	5, 6
23,32,41,50,59	शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
सोम, मंगल, गुरु	शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
चन्द्र, मंगल, गुरु	शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मकर, मिथुन	मित्र राशि	मकर, मिथुन
मिथुन, वृश्चिक, मकर	मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
लक्ष्मी	अनुकूल देवता	लक्ष्मी
पुखराज	शुभ रत्न	पन्ना
सुनहला, पीला हकीक	शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
मूंगा	भाग्य रत्न	नीलम
कांसा	शुभ धातु	कांसा
पीत	शुभ रंग	हरित
पूर्वोत्तर	शुभ दिशा	उत्तर
संध्या	शुभ समय	सूर्योदय के बाद
हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प	दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दाल चना	दान अन्न	मूँग
घी	दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Mr.

जीवन रत्नः	पुखराज	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मूंगा	भाग्योदय, धन
कारक रत्नः	मोती	दुर्घटना से बचाव, सन्तति सुख

Ms.

जीवन रत्नः	पन्ना	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, सुख
भाग्य रत्नः	नीलम	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
कारक रत्नः	हीरा	पराक्रम, कम खर्च, सन्तति सुख

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पङता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पङता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/03/2001-22/07/2002	अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती प्रथम ढैया	09/09/2009-15/11/2011	साढेसाती प्रथम ढैया	09/09/2009-15/11/2011
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-02/11/2014	साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-02/11/2014
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-19/01/2017	साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-19/01/2017
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022	चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/04/2030-25/05/2032	अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती प्रथम ढैया	29/06/2039-06/03/2041	साढेसाती प्रथम ढैया	29/06/2039-06/03/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2041-02/12/2043	साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2041-02/12/2043
साढेसाती तृतीय ढैया	02/12/2043-29/11/2046	साढेसाती तृतीय ढैया	02/12/2043-29/11/2046
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052	चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/05/2059-05/07/2061	अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती प्रथम ढैया	21/08/2068-25/10/2070	साढेसाती प्रथम ढैया	21/08/2068-25/10/2070
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/10/2070-20/04/2073	साढेसाती द्वितीय ढैया	25/10/2070-20/04/2073
साढेसाती तृतीय ढैया	20/04/2073-04/08/2076	साढेसाती तृतीय ढैया	20/04/2073-04/08/2076
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/01/2079-18/08/2081	चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/01/2079-18/08/2081

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र	ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम	अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	कम खर्च
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दम्पति	साढेसाती प्रथम ढैया	सम	सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	दुर्घटना से बचाव	साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बदनामी	साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	शत्रु से कष्ट
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन	चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दुर्घटना से बचाव

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Mr.

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Ms.

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	महिष	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	तुला	तुला	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.00		

कुल : **20 / 36**

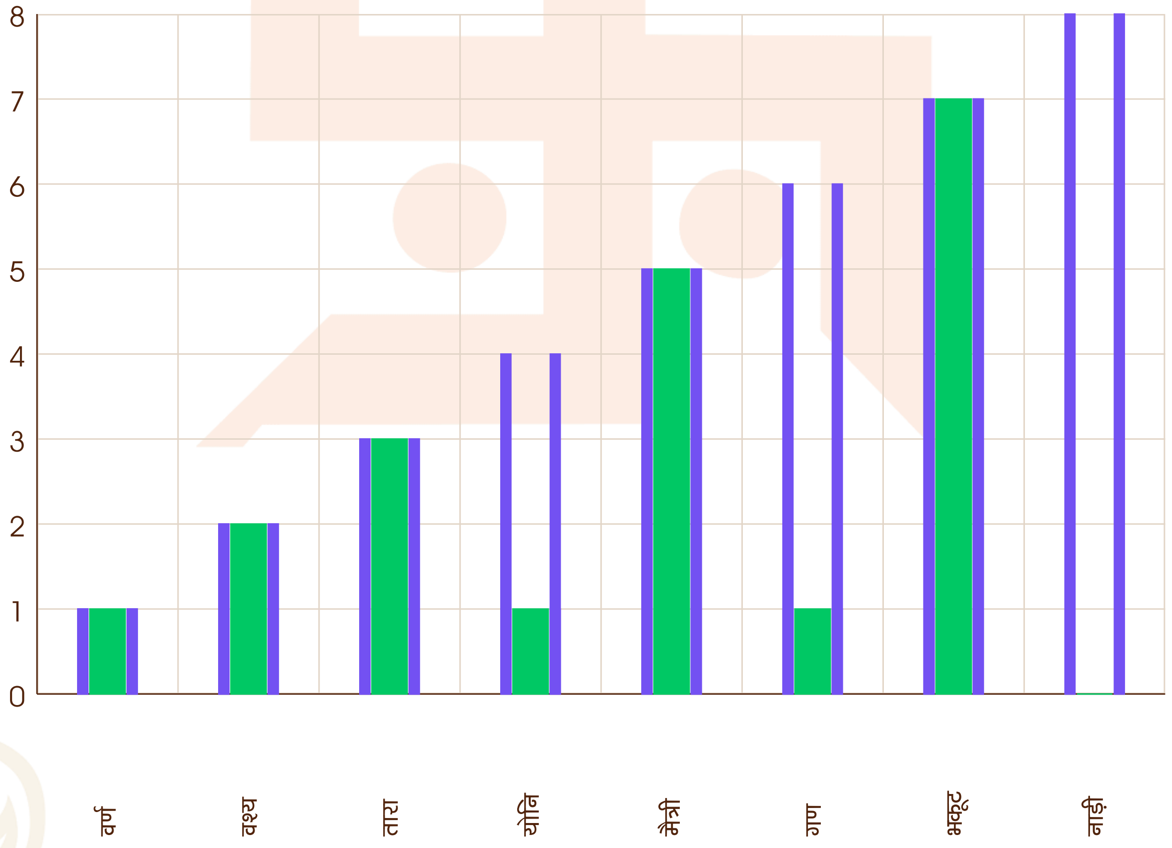

अष्टकूट मिलान

नाड़ी दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के नक्षत्र भिन्न हैं तथा राशियां एक है।

इस मिलान में नक्षत्र दोष भी विधमान है।

Mr. का वर्ग सर्प है तथा Ms. का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गो में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr. और Ms. का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr. मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि Ms. कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Mr. कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Mr. का वर्ण शूद्र है तथा Ms. का वर्ण भी शूद्र है। इसमें दोनों का वर्ण समान है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। दोनों के स्वभाव, व्यवहार, दृष्टिकोण, पसन्द-नापसन्द में समानता रहेगी। साथ ही दोनों में इतना प्रेम होगा कि लगेगा कि दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हों। दोनों के बीच गहरा प्रेम, सद्भाव, साहचर्य एवं पारस्परिक समझ बनी रहेगी। दोनों घर की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को उन्नत एवं सुदृढ़ बनाने के लिए साथ मिलकर कार्य करते रहेंगे।

वश्य

Mr. का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं Ms. का वश्य भी द्विपद अर्थात मनुष्य है अर्थात दोनों का वश्य समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान होगा। Mr. एवं Ms. दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार पसंद/नापसंद तथा बुद्धि एवं ज्ञान एक समान होंगे। यह मिलान अति अनुकूल है तथा दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हैं। दोनों के बीच प्रेम, सद्भावना एवं आपसी समझ एवं सामंजस्य की भावना बनी रहेगी। दोनों एक-दूसरे का सम्मान करेंगे तथा मिलजुलकर पारिवारिक दायित्वों का बोझ एक-दूसरे की सहायता एवं सहयोग करके साथ उठाते रहेंगे।

तारा

Mr. की तारा सम्पत तथा Ms. की तारा अतिमित्र है। अतः तारा मिलान अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान के कारण उत्तम स्वास्थ्य, धन एवं समृद्धि का बनी रहेगी। इस विवाह से Mr. एवं Ms. दोनों के सौभाग्य के द्वार खुल जायेंगे। Ms. एक अच्छे साथी की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा अपने पति की हर प्रकार से समय समय पर मदद करती रहेगी। घर में प्रेम, शांति एवं सौहार्द का माहौल बना रहेगा। इनकी संतान भी काफी अच्छी होंगी तथा जीवन में सफलता प्राप्त करती रहेंगी।

योनि

Mr. की योनि व्याघ्र है तथा Ms. की योनि महिष है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग- अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव

ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Mr. एवं Ms. दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि Mr. एवं Ms. दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

Mr. का गण राक्षस तथा Ms. का गण देव है। अर्थात Ms. का गण Mr. के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण Mr. निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही Mr. का Ms. के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। Ms. हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

Mr. एवं Ms. दोनों की राशि एक समान ही है इसलिये यह अति उत्तम मिलान है। ऐसा मिलान Mr. एवं Ms. तथा परिवार के चतुर्दिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। इन्हें अनेक रूपों में ईश्वरीय कृपा जैसे - सौभाग्य, सम्पत्ति, समाज में मान-सम्मान तथा योग्य संतान आदि प्राप्त होगी।

नाड़ी

Mr. की नाड़ी अन्त्य है तथा Ms. की नाड़ी भी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। Mr. एवं Ms. की एक ही नाड़ी अन्त्य होने के कारण शरीर में श्लेष्मा की अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना है। जोकि भावी दम्पत्ति के लिए खतरे की सूचक हैं। जिसके प्रभाववश संतान की मृत्यु भी संभव है। आपको श्वांस की तकलीफ, दमा जैसी बीमारियां तथा कमजोर स्वास्थ्य का सामना करना पड़ सकता है। आपकी संतान मानसिक रोग, सुस्त विकास एवं निम्न बौद्धिक स्तर की शिकार हो सकती हैं।

मेलापक फलित

स्वभाव

Mr. एवं Ms. की जन्म राशि वायुतत्व युक्त तुला राशि है। इसके प्रभाव से इन दोनों के मध्य स्वभावगत समानता रहेगी फलतः दाम्पत्य संबंधों में मधुरता होगी तथा वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा । अतः शास्त्रीय दृष्टि से यह मिलान उत्तम रहेगा ।

Mr. एवं Ms. की जन्म राशि का स्वामी शुक्र है। अतः Mr. एवं Ms. के संबधों में मधुरता तथा मित्रता का भाव विद्यमान रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति सहानुभूति सहयोग तथा समर्पण का भाव होगा। वे एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा करेंगे तथा सच्चे मित्र की तरह कमियों की उपेक्षा करके परस्पर सुख एवं शांतिमय वैवाहिक जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुख में भी एक दूसरे को पूर्ण सहयोग देंगे तथा सहायता आदि करने के लिए भी सक्रिय रहेंगे।

Mr. और Ms. की जन्म राशि परस्पर प्रथम - प्रथम भाव में पड़ती है। यह शास्त्रानुसार शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से Mr. और Ms. की प्रवृतियां तथा अन्य मानसिक समानताओं में उभयनिष्ठता रहती है जिससे जीवन में उचित सामंजस्य बनाए रखने में वे सफलता प्राप्त करते है । अतः Mr. और Ms. का परस्पर संबध मधुर रहेंगे एवं सुख तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे ।

Mr. और Ms. दोनों का वश्य मानव है। अतः इनकी रूचियों में समानता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताएं समान रहेंगी । अतः काम संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

Mr. एवं Ms. दोनों का वर्ण शूद्र है। अतः इनकी कार्य क्षमताएं समान रहेंगी तथा अपने कार्यो को बिना किसी चुनाव के परिश्रम एवं ईमानदारी से सम्पन्न करेंगे फलतः आर्थिक क्षेत्र में सुदृढ़ता बनी रहेगी।

धन

Mr. की तारा सम्पत तथा Ms. की तारा अतिमित्र है इसके शुभ प्रभाव से Mr. सौभाग्यशाली तथा धनवान व्यक्ति होंगे तथा Ms. के भाग्य से उनकी धन सम्पति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का उनकी आर्थिक स्थिति पर सामान्य प्रभाव रहेगा तथा उससे आर्थिक स्थिति सामान्य ही रहेगी। साथ ही मंगल का भी आर्थिक क्षेत्र पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार वे ऐश्वर्य एवं समृद्धि से युक्त होंगे तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Mr. और Ms. को अनायास धन प्राप्ति की पूर्ण संभावना रहेगी तथा जीवन में वे समस्त भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। विशेष रूप से Ms. का शुभ प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर रहेगा तथा सामाजिक स्तर पर भी उनका पूर्ण सम्मान रहेगा।

स्वास्थ्य

Mr. तथा Ms. दोनों की नाड़ी अन्त्य है। यद्यपि सामान्य रूप से यह नाड़ी दोष प्रतीत होता है परन्तु इनका जन्म भिन्न भिन्न नक्षत्रों में हुआ है तथा इनकी राशि का स्वामी एक ही ग्रह है। अतः नाड़ी दोष का इनके स्वास्थ्य पर कोई अशुभ प्रभाव नहीं होगा जिससे इनका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा ही रहेगा। लेकिन Mr. के स्वास्थ्य पर मंगल का प्रभाव रहेगा जिससे वे रक्त या पित संबंधी परेशानी एवं हृदय संबंधी कष्ट की प्राप्ति कर सकते है। साथ ही धातु या गुप्त रोगों की भी संभावना होगी एवं काम शक्ति की अल्पता के कारण दाम्पत्य जीवन में तनाव उत्पन्न होगा। अतः मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए Mr. को नित्य हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Mr. और Ms. का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Mr. और Ms. के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Ms. के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Ms. को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Ms. को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Mr. और Ms. सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Mr. और Ms. का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Ms. के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत Ms. के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

Ms. अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार Ms. के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

Mr. तथा उनकी सास के संबधों में सामान्यतया मधुरता ही रहेगी। साथ ही आपस में किसी प्रकार के मतभेद या तनाव के भाव की न्यूनता रहेगी। वे अपनी सास के प्रति श्रद्धा तथा सम्मानजनक व्यवहार रखेंगे तथा उन्हें अपनी माता के समान ही आदर प्रदान करेंगे। साथ ही सपत्नीक वह समय समय पर ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में Mr. के संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा आयु में पर्याप्त अंतर के कारण दोनों के मध्य काफी वैचारिक विभिन्नता तथा अन्य मतभेद रहेंगे परन्तु यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन किया जाय तो इनमें न्यूनता आ सकती है। साथ ही साले एवं सालियों से Mr. के संबध अच्छे रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग, स्नेह तथा सहानुभूति प्राप्त होगी एवं परस्पर मित्रता का भाव रहेगा। इस प्रकार ससुराल के पक्ष का दृष्टिकोण Mr. के प्रति उत्साहवर्द्धक नहीं रहेगा तथा सामंजस्य से ही इसमें अनुकूलता वनी रहेगी।

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अंक ज्योतिष फल

Mr.

आपका जन्म दिनांक 14 है। एक एवं चार के योग से आपका मूलांक 5 होता है। मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह है। एक अंक का सूर्य तथा चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु तथा पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह है। इन सभी ग्रहों का न्यूनाधिक मात्रा में आपके ऊपर प्रभाव रहेगा। मूलांक स्वामी बुध के प्रभावश आप नौकरी की अपेक्षा व्यापार मार्ग का चुनाव करना अधिक पसन्द करेंगे। रोजगार आप ऐसा चुनेंगे, जहाँ लेखा, लेन-देन, वाणिज्य, यांत्रिकी जैसे कार्य संपादित हों। फैक्ट्री, कम्पनी, उच्च व्यापार जगत आपको रास आयेगा।

बुध वाणी का दाता है। सूर्य प्रसिद्धि का, हर्षल परिवर्तन का। अतः आपके अंन्दर वाक् पटुता, बुद्धि-विवेक अच्छा रहेगा एवं आपकी सामाजिक स्थिति भी अच्छी रहेगी। मूलांक के प्रभाव से आपकी आर्थिक, सामाजिक स्थितियाँ परिवर्तनशील रहेंगी एवं परिवर्तन करते रहना आपको अच्छा लगेगा।

परिवर्तनशील गुण होने से आपके विचारों में समयानुसार, अवस्थानुसार बदलाव आता रहेगा। जो कि आपकी अन्तिम अवस्था तक चलेगा। इस क्रिया का अन्त में आपको लाभ अच्छा मिलेगा और आपका यश, नाम इत्यादि दीर्घकाल तक याद किया जाता रहेगा। आप अपनी कमियों का निरन्तर निरीक्षण करते रहेंगे तो निश्चित ही आप उक्त ग्रहों के प्रभाववश एक सफल व्यक्तित्व के धनी हो जायेंगे।

Ms.

आपका जन्म दिनांक 11 है। एक एवं एक का जोड़ दो आपका मूलांक है। एक का स्वामी सूर्य एवं दो स्वामी चन्द्र है। इन दोंनो ग्रहों के गुण-अवगुण आपके व्यक्तित्व में रहेंगे। आप अनुशासन पसन्द महिला होंगी एवं अपने नाम पर धब्बा नहीं लगायेंगी। समाज में आपकी इज्जत होगी। नाम एवं यश प्राप्त करेंगी। सूर्य प्रभाव से नियमितता रहेगी। चन्द्र प्रभाव कभी-कभी मनको चंचल भी करेगा उससे बचना हितकर रहेगा अन्यथा सफलता के स्थान पर कई बार चन्द्र प्रभाव असफलता भी दे देगा। संघर्ष करना आपकी आदत बन जायेगी। अतः कभी आप एकदम उच्चता प्राप्त करेंगी तो कभी आपको थोड़ा झुकना भी पड़ेगा।

बौद्धिक स्तर आपका अच्छा रहेगा एवं ऐसे कार्य जिनमें बुद्धि का प्रयोग अधिक होता हो आपके लिये शुभ रहेगा। असफलताओं से आप निराश नहीं होंगी, क्षीण तो होंगी फिर भी हिम्मत नहीं हारेंगी और एक दिन फिर सूर्य की तरह प्रकाशित होंगी।

स्वभाव में आपके थोड़ा हठीपन रहेगा एवं क्रोध भी शीघ्र आ जाया करेगा। इन अवगुणों से बचना आपके लिये हितकर रहेगा। आपको ऐसे क्षेत्रों का चुनाव करना हितकर रहेगा, जहाँ अत्यधिक परिवर्तनशीलता न हो। सामान्य कामकाज जिन क्षेत्रों में रहे, वह आपके

लिये शुभ रहेंगे। विशेष कर बुद्धि विवेक के कार्य अधिक योगप्रद रहेंगे।

Mr.

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगे। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

Ms.

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की हिमायती होंगी एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़ी दूर तथा आधुनिक होंगी।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रूझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगी। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

लग्न फल

Mr.

आपका जन्म उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में मीन लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर कन्या का नवमांश एवं मीन का द्रेष्काण भी उदित था। इस संबंधित लग्नादिक ज्योतिषीय आकृति आपके जीवन को धन संपत्ति से युक्त आमोद-प्रमोद एवं हर्षोल्लास से परिपूर्ण आनंदमय जीवन बिताने के साधनों से युक्त करता है।

प्रायः हर दशा में ज्योतिषीय प्रभाव आपका पक्षधर है। यदि आप अपने हस्तगत कार्य व्यवसाय को समय पर सुव्यवस्थित ढंग एवं समर्पण की भावना से संपादित कर लिए तो आपका जीवन सफल होने की संभावना है, बशर्ते कि आप सकारात्मक ढंग से कार्यो का संपादन करें। फलस्वरूप यह आपके लिए उन्नति कारक होगा। इस दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि आप वासनात्मक प्रवृति को बहुत महत्त्व देकर इन कार्यो से संबंधित रहते है। यदि आप इस प्रवृति हेतु सतर्कता नहीं बरतें तो यह वासना आपको मिट्टी पलीत कर देगा। अर्थात् आपका विनाश कर देगा। आप इनका उन्मूलन करें अन्यथा इस उत्तेजना के कारण आपके जीवन की ललिमा नष्ट हो जाएगी तथा इस प्रवृति के कारण मात्र आपका परिवार ही अस्त-व्यस्त नहीं हो जाएगा। बल्कि यह आपको अकर्मण्य बना कर आपकें कार्य कलाप से भी दिशा हीन बना देगा। परंतु यदि आप इस प्रवृत्ति को समाप्त कर दिए तो आप बहुत अच्छी प्रकार उन्नति कर सकेंगे। आप धन संचय कर सकेंगे। इस प्रकार आप मात्र अपने उपार्जन को ही नहीं बढ़ाएंगे, बल्कि आप धन संपत्ति भी सर्वथा अर्जित करेंगे। आपमें ऐसी क्षमता है कि आप अपने प्रतिपक्षी को परास्त कर देंगे जो कि आपके कार्य-व्यवसाय को नष्ट करने का प्रयास करेगा।

आप मात्र एक सुखद एवं अभिमंत्रित भवन के स्वामी होंगे। बल्कि हर दशा में अपने मित्रों के अपना कर अपनी मित्र मंडली का विस्तार करेंगे। आप समाजिक क्लब के सदस्य होंगे। आप अपनी भद्रता एवं अतिथ्य सत्कार के कारण अपने मित्र मंडली में प्रख्यात भी होंगे। परंतु आपको कुछ समस्याओं से मुठ-भेड़ भी करना पड़ेगा। आप अन्य लोगों के लिए किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुंचाने वाले बल्कि अतिशय विश्वास पात्र हैं। आप किसी के भी साथ सामंजस्य एवं सकारात्मक फल प्राप्ति की उत्कंठा रखते हैं। जब आप किसी भी मित्र के साथ प्रतिज्ञा करते हैं उसे बहुत अच्छी प्रकार निभाते हैं। परंतु क्या वे इस प्रकार पीछें भी लौट सकते है। नहीं। वास्तव में संयोगवश ऐसा कुछ घटित हो जाए उस परिस्थिति में जो आपसे संबंधित है। वे लोग आपकी आवश्यकता के समय अथवा जरूरत पड़ने पर अपने कार्य को त्याग कर आपके पक्ष में अपना योगदान करते हैं। अतएव आप उन पर अत्यंत भरोसा कर के अन्यों को उपेक्षित अथवा वहिष्कृत कर देते हैं।

यदि आप सतर्कता पूर्वक मर्यादित पथ पर चलते हैं तो आपके पारिवारिक सदस्य तथा सामान्य जन आपके गुणों एवं साहसिक प्रवृति तथा दानशीलता हेतु आपकी प्रशंसा करेंगे। आप धार्मिक प्रवृति के प्राणी हैं। आप तीर्थ स्थलों का परिदर्शन करेंगे एवं पौढ़ावस्था में आप भक्ति के प्रदर्शन में अभिरूचि रखेंगे तथा धर्म-दर्शन एवं पराविज्ञान में दक्ष हो जाएंगे। आप इस

विषय में बहुत अधिक ज्ञानार्जन कर सकते हैं। यदि आप चयन करेंगे तो कोई छोटा धर्मोपदेशक भी बन सकते हैं।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल दिन गुरुवार, मंगलवार एवं रविवार का दिन उत्तम हैं। शेष साप्ताहिक तीन दिन यथा बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन सामान्य फलदायी है।

आपके लिए अंकों में उत्तम एवं विश्वसनीय अंक 1, 3, 4 एवं 9 अंक है। परंतु हर दशा में 8 अंक अनुकूल नहीं है।

आपके लिए रंगों में रंग पीला, लाल, गुलाबी एवं नारंगी रंग आपके लिए अनुकूल हैं। परंतु नीला रंग आपके लिए किसी भी दशा में अनुकूल नहीं है।

Ms.

आपका जन्म आर्द्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ था। जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर मिथुन लग्न के साथ-साथ मकर का नवमांश एवं तुला का द्रेष्काण भी उदित था। फलस्वरूप स्पष्ट रूपेण यह विदित होता है कि आपका व्यक्तित्व विखंडित है। यदा-कदा आप अपने भरोसे ही निश्चित रूप से दूसरे व्यक्ति की संपत्ति अधिग्रहण करेंगी। आप किसी अन्य व्यक्ति को बुद्धिमत्ता पूर्वक अनुचित ढंग से बहुत लाभ उठाने के लिए अपने साथ संलग्न कर लेंगी। आप किसी प्रकार दो परस्पर विरोधी विशिष्ट कार्य संपादन कर सकेंगी। यह अनुमान कोई भी व्यक्ति नही लगा सकता है।

आप बहुत ही चुस्त चालाक महिला हैं। आप किसी भी व्यक्ति का अध्ययन का कलात्मक ढंग से उसकी भावना को अनुकूल रूपेण परिवर्तित कर देंगी।

आप गायन एवं नृत्य कला से आनंद प्राप्त करती हैं तथा आपकी विनोदी अर्थात् मनोरंजक वार्तालाप से अन्य लोग प्रभावित होते हैं। यह तथ्य पूर्ण विषय है कि आप किसी भी क्षेत्र में उच्चतम शिखर तक उन्नति प्राप्त करेंगी। लेकिन आप आत्मसंयम पूर्वक एकाग्र होकर किसी न किसी प्रकार कर्म व्यवसाय के लिए कोई न कोई (हल) मध्यमार्ग अपना कर तथा अन्य क्षेत्र को पार कर सफल हो जाएंगी। आपमें एक बड़ी दुर्बलता है कि आप किसी कार्य को आगे बढ़ाकर पीछे हट जाती है। यदि आप अपनी मनोभिलाषा को दृढ़ रखें तथा उच्चस्तरीय कार्य संपादन करें तो आप सफलता प्राप्त कर लेंगी।

आप में अन्य नकारात्मक दुर्गुण यह है कि आप अपनी चिड़-चिड़ापन प्रवृति के प्रति सतर्क नही रहती अस्तु अपनी मनोदशा में परिवर्तन लाएं।

आप अति शीघ्रता पूर्वक अपना धैर्य खो बैठती हैं। अर्थात् आपको धैर्य धारण करना चाहिए। इस प्रकार की प्रवृति से आपको आत्मनिर्भर होने में विलंब हो सकता है। इस प्रकार आपको समझ पाना उनके लिए दुष्कर है। क्योंकि आप उन पर अपना प्रभाव दोहरी नीति से डालकर आनंद प्राप्त करती हैं। यह भी विचारणीय है कि वास्तव में आपकी भावनाओं को सभी

जन संक्षिप्त रूप से अन्यथा समझते है।

आपका रंग सांवला, दुबला-पतला शरीर एवं उच्च आकृति की प्राणी हैं। यह सत्य एवं प्रमाणित है कि विपरीत योनि के सदस्य आपकी आकर्षक आखों एवं रूचिकर आनंददायक बातों से प्रसन्न एवं आप से युक्त रहते हैं। परिणामस्वरूप आपके अनेक प्रेम संबंध है तथा आप पूर्ण रूपेण असंभाव्य रोमांचक एवं दुःसाहसपूर्ण रवैये की भुक्त भोगी हैं। आप घर में अपनी तानाशाही प्रवृत्ति के अनुकूल जीवन साथी पर नियंत्रण रखना चाहती हैं। जो आपकी कामुकता संबंधी स्वार्थ साधन का सहयोगी हो। परंतु जब पति इसे स्वीकार नही करते तो आप कामवासना की पूर्ति हेतु घर से बाहर अपना संबंध का विस्तार करते हैं। आप घर से बाहर अपने प्रेम संबंधी को सावधानिक पूर्वक चयन करती हैं।

मिथुन लग्नादि से संबंधित प्राणी के लिए अनुकूल व्यक्ति वह है जिसका जन्म सिंह, मेष, तुला एवं कुंभ राशि लग्न में हुआ हो। यदि आप समुचित जीवन साथी का चयन कर सके तो मात्र आपका जीवन ही शांति पूर्ण नही रहेगा बल्कि सर्वथा अच्छी संतान का सच्चा आनंद प्राप्त करेंगे। आपको अपने जीवन मार्ग पर अखंडित और बाधा रहित आनंदपूर्ण जीवन बिताने के लिए आपके जीवन की अनुकूल आयु पचीसवां वर्ष से उज्जवलतम है। सामान्यतः आपका स्वास्थ्य उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा। आपको अपनी स्वास्थ्य की रक्षा एवं सुख पूर्वक जीवन निर्वाह हेतु श्वांस रोग, दमा, कफ उदासीनता एवं स्वरभंग रोगादि को उत्पन्न नही होने देने की सतर्कता से बहुत दिनों तक स्वस्थ्य रहेंगी।

आपके लिए बुधवार, एवं शुक्रवार, का दिन अनुकूल हैं, तथा मंगलवार रविवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन कठिन एवं हानिप्रद प्रमाणित होगा। शनिवार मध्य फलदायक है।

आपके लिए अंक 7 एवं 3 अंक अनुकूल एवं चमत्कारिक है। परंतु अंक 4 और 8 अंक आपके लिए अव्यवहारणीय है।

आपके लिए रंग मोतिया, नीला, हरा पीला एवं गुलाबी रंग अनुकूल है एवं लाल रंग एवं काला रंग सर्वथा त्यागनीय है।

नक्षत्रफल

Mr.

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, नाड़ी अन्त्य, योनि व्याघ्र, गण राक्षस तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर ”ते” या ”तै” से प्रारम्भ होगा।

आप हमेशा अपनी स्त्री के वश में रहेंगे तथा अधिकांश ग्रहस्थ संबंधी कार्यों को उसी के निर्देश तथा सलाह से सम्पन्न करेंगे। उसका आपके ऊपर इतना प्रभाव होगा कि आप उसकी आज्ञा के बिना स्वतंत्र रूप से कुछ करने में अपने आपको असमर्थ सा अनुभव करेंगे। आपका स्वभाव भी अभिमानी होगा तथा आप अपनी इस प्रवृति का समय समय अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे तथा आपका कोई भी दुश्मन आपके समक्ष नही टिकेगा। साथ ही आप उग्र स्वभाव के भी होंगे तथा अकारण ही छोटी छोटी बातों में उत्तेजित होते रहेंगे। अतः इससे कई बार आप अतिरिक्त परेशानी का सामना करेंगे।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक क्रोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

कभी कभी आप अन्य जनों के विरुद्ध अकारण ही अपने मन में द्वेष भावना को रखने वाले होंगे। यदि कोई अन्य आदमी सफलता प्राप्त करता हैं या कोई विशेष उपलब्धि उसे प्राप्त होती हैं तो उसके प्रति आपके मन में व्यर्थ ही ईर्ष्या तथा द्वेष की भावना उत्पन्न हो जाएगी। दूसरों की चीजों को देख कर आपके मन लोभ की भावना उत्पन्न होगी जिससे आप मानसिक रूप से हमेशा आन्दोलित रहेंगे। आपका शरीर तजे युक्त तथा आकर्षक रहेगा तथा बोलने में आप अत्यन्त ही चतुर रहेंगे एवं इसी वाक्यटुता के आधार पर कई महत्वपूर्ण सफलताएं भी अजित करेंगे।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

आप प्रारम्भ से ही धामिक प्रवृति के व्यक्ति रहेंगे तथा देवताओं के हवनकार्यादि धामिक कृत्यो को करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप का मित्रवर्ग भी सीमित रहेगा।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

आप अर्न्तमन में दया के भाव की भी अल्पता कभी कभी दृष्गिोचर होगी। साथ ही समाज में अन्य जनों से भी आपके प्रेमपूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोऽतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

Ms.

आप स्वाती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ग सर्प, वर्ण शूद्र, गण देव तथा योनि महिष होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "त" से प्रारम्भ होगा।

आपकी प्रवृति हमेशा सहनशीलता के भाव से युक्त रहेगी तथा सुख दुःख को समान रूप से सहन करने में आप समर्थ रहेंगी। आपकी व्यापारिक कार्यों में गहन रूचि रहेगी तथा जीवन यापन के लिए भी आप अपने मुख्य व्यवसाय के रूप में व्यापार कार्य को वरीयता प्रदान कर सकती हैं। आपका हृदय दया तथा करूणा से युक्त रहेगा तथा दीन दुखियों तथा जरूरतमन्द लोगों की आप यथा शक्ति सेवा तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर रहेगी जो श्रोता को अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर लगेगी अतः सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे तथा आपको आदरणीय दृष्टि से देखेंगे। साथ ही धार्मिक प्रवृतियों का भी आप अनुपालन करेंगे तथा निष्ठापूर्वक इनका अनुसरण करेंगे।

दान्तो वणिक्कृपालु प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ।
बृहज्जातकम्

आप अपने जीवन काल में ब्राहमण तथा देवताओं के प्रिय कार्य को सम्पन्न करने वाली होंगी अर्थात धार्मिक कृत्यों को करेंगी तथा इनके प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा तथा भक्ति भावना रहेगी। आपका जीवन विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर व्यतीत होगा। साथ ही आर्थिक स्थिति भी सामान्यतया दृढता को प्राप्त रहेगी तथा अभाव की अनुभूति नहीं होगी परन्तु बुद्धि मध्यम ही रहेगी।

स्वात्यां देवमहीसुरप्रियकरो भोगी धनी मन्द धीः।
जातकपरिजातः

आप देखने में अत्यन्त ही सुन्दर रहेंगी तथा अपने सौन्दर्य के द्वारा सभी लोगों को आकर्षित तथा प्रभावित करने में सफल रहेंगी। आपका मुख मंडल भी तेज से सर्वथा देदीप्यमान रहेगा। समाज में अन्य लोगों से आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध भी रहेंगे तथा उनसे पूर्ण आदर एवं सहयोग को प्राप्त करेंगी। इस सबसे आपका चित्त हमेशा प्रसन्न रहेगा। साथ ही आप राज्य या सरकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन की प्राप्ति करेंगी तथा आजीवन प्रसन्नतापूर्वक उसका उपभोग करेंगी।

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीति रतिप्रसन्नः।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपति प्राप्त विभूतियुक्तः।।

विविध प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने में आप रूचिशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक इनका ज्ञान प्राप्त करेंगी। साथ ही समाज में एक सम्मानीय विदुषी के रूप में आपकी ख्याति रहेगी। धर्म के प्रति आप अत्यन्त ही निष्ठावान रहेंगी तथा समस्त धार्मिक कार्यकलापो को श्रद्धा से सम्पन्न करेंगी। आपका स्वभाव सुशील रहेगा परन्तु प्रवृति कृपणता रहेगी।

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

राशिफल

Mr.

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शरीर तथा मुख से देखने में सुन्दर रहेंगे। आपकी आखें बड़ी तथा नाक ऊंची होगी। समाज में अन्य जनों से आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे तथा विविध प्रकार के वाहन साधनो से भी सुसम्पन्न रहेंगे। वाहन एवं भूमि आदि जायदाद को आप शक्ति शाली होंगे तथा इनसे पूर्ण रूपेण धनार्जन करके धनैश्वर्य से सर्वथा युक्त रहेंगे एवं आनन्दपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। आप एक पराक्रमी पुरुष भी होंगे तथा आपका समाज में पूर्ण प्रभाव रहेगा जिससे लोग आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। पत्नी से आप हमेशा पराजित से रहेंगे तथा समस्त सांसारिक कार्यों को उसी की भावना एवं सलाह से सदा सम्पन्न करेंगे। नाना प्रकार के कार्यों को सफलतापूर्वक करने में आप दक्षता प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियमानुसार इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। धन धान्यादि को संग्रह करने की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगे तथा बन्धु वर्ग के कल्याण कार्यों को करने में हमेशा तत्पर रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप समाज में देव, ब्राहमण तथा भद्रजनों की सेवा करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा शुद्धता से रहकर अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। आपका शरीर भी सुगन्धित रहेगा। आपको यात्रा तथा भ्रमणादि का विशेष शौक रहेगा अतः इसी में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करेंगे। क्रय विक्रय के कार्य में आप अत्यन्त चतुराई का प्रदर्शन करेंगे। आप समाज में देववाचक शब्द के द्वितीय नाम को धारण करके समाज में ख्याति प्राप्त कर सकेंगे। आप अपने समीपी संबंधियों तथा बन्धुओं का प्रयत्न पूर्वक भलाई तथा सहयोग करेंगे। परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा आपको समाज में अपेक्षित भी होना पड़ेगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुक्।
बन्धूनामुपकारकृद्धि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप में धैर्य की पूर्ण प्रधानता रहेंगी अतः अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। न्याय के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेंगी तथा स्वयं भी हमेशा निष्पक्ष भाव से अपने भावों को स्पष्ट करेंगे। आपकी इस निष्पक्षता तथा न्याय के प्रति श्रद्धा को देखकर अन्य लोग अपने विवादों का समाधान करने के

लिए आपको मध्यस्थ या पंच बनाकर आपका फैसला स्वीकार करेंगे। आपकी सन्तति भी अल्प मात्रा में ही रहेंगी तथा भाग्योदय भी काफी विलम्ब से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः कयविकयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद न बड़ा अपितु मध्यम रहेगा। सरकार के उच्च अधिकारी तथा पदाधिकारी वर्ग को प्रसन्न करने में आप चतुर होंगे तथा इन लोगों से पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। कभी कभी आप अत्याधिक बोलेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता होगी क्यो कि लोग आपसे ऐसी अपेक्षा नही करेंगे। साथ ज्योतिष शास्त्र का भी आपको न्यूनाधिक ज्ञान रहेगा। भाइयों एवं सेवक जनों के प्रति आप पूर्ण रूप से अनुरक्त रहेंगे।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप अनुचित अवसर पर अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे। इससे आपको मानसिक तथा आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पड़ सकेगा तथा दुःखनानुभूति भी करनी पड़ेगी। आप मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में उपयोग करेंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी जिसका प्रदर्शन आप जीवन में समयानुसार करती रहेंगी। आपकी आखें हमेशा चंचल रहेगी तथा धनागमन भी चंचलता से ही होगा अर्थात् कभी अत्याधिक तथा कभी अत्यल्प। इससे आपकी आथिक स्थिति हमेशा विषम ही बनी रहेगी। आप घर में बलवान तथा बाहर निर्बलता का अहसास करेंगे। मित्रो के मध्य आप प्रिय रहेंगे तथा विदेश में भी निवास कर सकेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अपने जीवन काल में विविध प्रकार के वाहनों तथा ऐश्वर्य वैभव से आप सुसम्पन्न रहकर इनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृति दानशील रहेंगी तथा दीन दुःखियों की यथा शक्ति आप सहयोग तथा सहायता करते रहेंगे। स्त्री के आप प्रिय रहेंगे तथा उससे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे।

वृषतुरंग विकमविकमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विकमः।।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शुक्ल योग, शतभिषा नक्षत्र तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सर्वथा वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा नही चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान तथा अन्य समस्त महत्वपूर्ण कार्यो में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, चावल, श्वेत चन्दन आदि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फल भी कम ही होंगे। साथ ही शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिये।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

Ms.

तुला राशि में जन्म लेने के कारण आप शरीर तथा मुख से सुन्दर रहेंगी तथा आँखें बड़ी बड़ी होंगी। आपकी नाक भी ऊँची होगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के वाहन साधनों से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनाका उपभोग करेंगी। सामाजिक संबंधो की विस्नतता के कारण आप के अन्य जनों से मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध स्थापित रहेंगे। साथ ही वाहन तथा जायदाद से भी आप सुसम्पन्न होकर इनसे धनार्जन करती रहेंगी। आप एक प्रभावशाली महिला होंगी तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा। समाज के सभी वर्गो के लोगों से आप पूर्ण मान तथा सम्मान प्राप्त करेंगी। धनैश्वर्य तथा वैभव से भी आप हमेशा सुशोभित रहेंगी। पति को आप पूर्ण रूप से अपने वश में रखेंगी। तथा वे भी आपके निर्देश तथा सलाह पर ही समस्त कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। किसी भी कार्य को आप चतुराई पूर्ण तरीके से सम्पन्न करने में हमेशा सक्षम रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में सर्वथा भक्तिभाव रहेगा। धन धान्यादि को संग्रह करने की ओर भी आपकी प्रवृति रहेगी तथा बन्धु वर्ग के कल्याण कार्यों में आप सर्वथा तत्पर रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।

सारावली

आप हमेशा ब्राहमण देवता तथा भद्र पुरुषो की सेवा में तत्पर रहेंगी तथा इनके प्रति आपके मन में श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रहेगा। आप विविध शास्त्रों का अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगी तथा एक श्रेष्ठ विदुषी के रूप में समाज में ख्याति प्राप्त करेंगी। आपका शरीर भी सुगन्धित रहेगा। घूमने फिरने का आपको बहुत शौक रहेगा तथा अधिकाँश समय यात्रादि में व्यतीत करेंगी। क्रय विक्रय संबंधी कार्यो में आप अत्यन्त दक्षता को प्राप्त करेंगी। बन्धु तथा सम्बन्धियों की आप प्रबल हितकारिणी होंगी तथा यत्न पूर्वक उनके हित कार्य को करेंगी। परन्तु बाद में इन्हीं लोगों से आपको उपेक्षित भी होना पड़ेगा साथ ही धन से भी आप युक्त रहेंगी।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः कयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रुषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप अत्यन्त ही न्याय प्रिय रहेंगी तथा अपनी जो भी बात करेंगी सभी लोग उससे सहमत रहेंगे अतः आपसी झगड़ों तथा विवादों को समाप्त करने के लिए लोग आपसे मध्यस्थ या पंच बनने का अनुरोध करेंगे। इस कार्य को आप निष्पक्ष तथा ईमानदारी से पूर्ण करेंगी जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आपकी सन्ततियां अल्प मात्रा में ही उत्पन्न होंगी तथा भाग्योदय भी विलम्ब से ही होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः कयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

देखने में आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा। सरकार के उच्चाधिकारियों तथा पदाधिकारियों को प्रसन्न करने की कला में आप निपुण रहेंगी तथा इनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगी। कभी कभी आप बहुत बोलेंगी। इससे लोग आपसे दूर रहने की कोशिश करेंगे फलतः आपके सामाजिक प्रभाव में न्यूनता आएगी। ज्योतिष शास्त्र अथवा ग्रहनक्षत्रादि के ज्ञान देने वाले शास्त्र के भी आप ज्ञाता रहेंगी। आपका अपने बन्धुओं तथा सेवकों के प्रति भी स्नेहशील व्यवहार रहेगा।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

आप कभी कभी सुअवसर पर अपने क्रोध को प्रदशित करेंगी फलतः बाद में इस के प्रति आपके मन में दुःख की अनुभूति होगी। आप अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुरवाणी का अपने

सम्भाषण में प्रयोग करेंगी जिससे सभी लोग आपसे पूर्ण रूपेण प्रसन्न रहेंगे साथ ही आपका हृदय दयालुता की भावना से भी युक्त रहेगा तथा दीन दुःखियों की आप यत्नपूर्वक सेवा एवं सहायता करती रहेंगी। आपके नेत्रो में भी हमेशा चंचलता की बहुलता रहेगी जीवन में आपकी आर्थिक स्थिति अस्थिर रहेगी कभी आपके पास अत्याधिक मात्रा में धनागम होगा तो कभी अत्यल्प मात्रा में। घर में आप बलवती तथा बाहर अत्यन्त दुर्बलता को प्राप्त होंगी। आप मित्रों के मध्य अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा विदेश में निवास कर सकेंगी। इसके साथ ही बन्धुवर्ग को आप हमेशा सहयोग करती रहेंगी।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप विभिन्न प्रकार के वाहनादि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके अर्न्तमन में सर्वथा व्याप्त रहेगी। पति की आप हमेशा अति प्रिया रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगी। साथ सम्पूर्ण जीवन में आप धनैश्वर्य एवं वैभव से सम्पन्न रहकर आनन्दपूर्वक उसका उपभोग करेंगी।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरुवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, क्रय विक्रयादि शुभ कार्यों को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरुवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखे।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति प्राप्त करने में बाधाएं तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चाहिए एवं शुक्रवार के भी उपवास करने चाहिए। साथ ही हीरा, पन्ना, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत चन्दन चावल, दूध आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों के प्रभाव में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 2000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ हृीं श्रीं शुकाय नमः।

पाया विचार

Mr.

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीड़ित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

Ms.

रजत पाद में जन्म होने के कारण आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा इसमें पूर्ण कोमलता तथा कान्ति भी विराजमान रहेगी। आपकी मुखाकृति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा अनावश्यक इच्छाओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करती रहेंगी आपकी गति मधुर एवं आकर्षक रहेगी। जीवन में धन सम्पति तथा पुत्र से आप सुसम्पन्न तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपका सम्मान करेंगे एवं अधिकांशतया मुख्य कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील एवं विन्रम स्वभाव की महिला होंगी तथा धन संचय के प्रति भी आप पूर्ण रूप से यत्नशील रहेंगी। जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अधिकांश सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी।

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

गण फलादेश

Mr.

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में बोलने वाले होंगे। आपका मन में भी करूणा के भाव की परिलक्षित होगा। लेकिन साहस का आप में अभाव नही रहेगा। अपने साहसी स्वभाव के कारण अधिकांश कार्यो को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे तथा साहसिक कार्यो को करने के लिए स्वयं उत्सुक रहेंगे। आपकी छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही क्रोध प्रदर्शन करने की आदत रहेगी। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा शारीरिक बल का अभाव नही होगा परन्तु अन्य जनों से आपका कलह चलता रहेगा फलतः अधिकांश लोग आपसे वैमनस्य का भाव रखेंगे। अतः अन्य जनों से विनम्रता पूर्वक व्यवहार करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

जीवन में आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। आपकी आकृति भी सुन्दर होगी परन्तु वाणी कभी कभी अत्यन्त ही कटु होगी जो श्रोता को बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगेगी। अतः मधुर शब्दों का वार्तालाप में प्रयोग करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहें।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।
पुरुषोदुस्सहब्रूते प्रमेही राक्षणे गणे।।
मानसागरी

Ms.

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त मधुर एवं प्रिय रहेगी। आप अपने विचारों को सुगमता से प्रकट करेंगी तथा अन्यो के विचारों को भी सुगमता से ही ग्रहण करेंगी। यह आपकी एक स्वाभाविक प्रवृति होगी। अल्प मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना आपका प्रिय कार्य होगा। आप गुणों की पूर्ण ज्ञाता होंगी तथा स्वयं भी महान लोगों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से सर्वथा युक्त रहेंगी। इसके अतिरिक्त विविध प्रकार के धनधान्यों तथा ऐश्वर्य आदि से भी आप आजीवन सुसम्पन्न रहेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

आपका सौन्दर्य देखने में अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा तथा आपकी प्रवृति क्षमाशीलता से सुशोभित रहेगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा हमेशा सादगी को ही पसन्द करेंगी। अनावश्यक भौतिकता की आप हृदय से उपेक्षा करेंगी। इसके अतिरिक्त समाज

में एक महान विदुषी के रूप में आप सम्मानित तथा पूजनीया रहेंगी।

सुन्दरो दानशीलश्च कान्तिमान सरलः सदा।
अल्प भोगी महाप्रज्ञो नरो देवगणो भवेत।।
मानसागरी

योनी फलादेश

Mr.

व्याघ्र योनि में पैदा होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रता प्रिय रहेगी। आप किसी भी कार्य को अपनी इच्छानुसार करना पसन्द करेंगे तथा बाहरी किसी भी हस्तक्षेप को पसन्द नही करेंगे। धन धान्य का आप यत्नपूर्वक अर्जन करने में सर्वथा तत्पर रहेंगे। गुणों को ग्रहण करने की प्रवृति भी आपके मन में हमेशा विद्यमान रहेगी। आप अपने कार्यक्षेत्र में एक पूर्ण प्रशिक्षित विशेषज्ञ के रूप में कार्य करेंगे। अतः सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। धन वैभव तथा ऐश्वर्य का आपके पास अभाव नही रहेगा तथा इससे पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न होकर जीवन व्यतीत करेंगे। लेकिन आप स्वयं ही अपनी प्रशंसा अपने मुख से करेंगे अतः इससे कभी कभी आपकी सामाजिक अवमान होगी।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

Ms.

महिष योनि में उत्पन्न होने के कारण आप झगड़े तथा वाद विवाद में अधिकाँश रूप से सर्वदा विजयी ही रहेंगी हार का सामना कम ही करना पड़ेगा। आप स्वयं भी एक साहसी महिला होंगी तथा साहस युक्त कार्यों को करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। आपकी संतति अधिक सख्यां में होगी। आपकी प्रकृति वायु प्रधान होगी तथा यदा कदा वायु रोगों से भी आपको व्याकुल रहना पडेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मध्यम बुद्धि रहेगी तथा तीक्ष्णता का इसमें अभाव रहेगा।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

Mr.

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

Ms.

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य की स्थिति चतुर्थ भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। धन वैभव से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको सहयोग प्रदान करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आप उनसे समान्यतया धन सम्मान एवं वाहनादि भी प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही वे व्यापार तथा अजीविका सम्बन्धी कार्यो में भी आपकी सहायता करेंगे।

आपके मन में उनके प्रति सामान्य श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा एवं इच्छानुसार यदाकदा उनकी आज्ञा का अनुपालन भी करती रहेंगी। परन्तु आपके आपसी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे एवं परस्पर कई प्रकार के मतभेद विद्यमान रहेंगे फिर भी आप अपनी ओर से उन्हें कम से कम कष्टानुभूति के लिये सतत् प्रयत्नशील रहेंगी एवं अवसरानुकूल उनकी सहायता

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

ग्रह फल - चन्द्र

Mr.

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकारस्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

Ms.

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्‌टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

Mr.

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

Ms.

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रुपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे

परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

ग्रह फल - बुध

Mr.

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

Ms.

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

ग्रह फल - गुरु

Mr.

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

Ms.

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्व्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

ग्रह फल - शुक्र

Mr.

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

Ms.

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराक्रमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

ग्रह फल – शनि

Mr.

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

Ms.

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

ग्रह फल - राहु

Mr.

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

Ms.

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

ग्रह फल – केतु

Mr.

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

Ms.

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

Mr.

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वस्थ एवं बलवान होते हैं तथा सफलता एवं समानता के प्रतीक माने जा सकते हैं। इनके चेहरे पर सौम्यता का भाव रहता है तथा प्रेम के क्षेत्र में ये सरलता तथा भावुकता का प्रदर्शन करते हैं। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारों का शीघ्र ही सृजन कर लेते हैं। इनके विचारों से सामाजिक जन प्रभावित रहते हैं फलतः सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा आदर अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। भौतिकता के प्रति इनके मन में तीव्र आकर्षण रहता है तथा भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये सुख एवं प्रसन्नता की अनुभूति करते हैं। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य से ये युक्त रहते हैं तथा विभिन्न स्रोतों से धनार्जन करते हैं।

प्रकृति के प्रति इनके मन में आकर्षण रहता है तथा प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करना रूचिकर लगता है। ये अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं फलतः इनके उन्नति मार्ग सर्वत्र प्रशस्त रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप सुन्दर स्वस्थ एवं बलवान होंगे तथा आपका व्यक्तिव भी आकर्षक होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे अतः विभिन्न विषयों का ज्ञान अर्जित करके समाज में एक विद्वान के रूप में आदरणीय रहेंगे। एक विचारक के रूप में भी आपकी प्रतिष्ठा होगी। भौतिकता के प्रति आप आकर्षित रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक सुखैश्वर्य एवं वैभव को अर्जित करके उनका उपभोग करेंगे।

लग्न में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी आप स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगे। स्वभाव से आप शांत प्रिय होंगे तथा उग्रता के भाव की न्यूनता होगी। साथ ही कार्य सम्पन्न करने में अत्यंत ही दक्ष होंगे तथा दक्षता से सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलता अर्जित करेंगे। इससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में सफल होंगे। कला एवं शिल्प में भी आपकी अभिरूचि रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक आप इन क्षेत्रों में ख्याति अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आर्थिक रूप से आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे। आपके आयस्रोत एक से अधिक होंगे। आपमें धैर्य एवं सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा। साथ ही राज कार्यों तथा उच्चाधिकारी वर्ग से नित्य लाभ एवं सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इनके सहयोग से यथा समय सिद्ध होंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्य कलापों तथा अनुष्ठानों को अवसरानुकूल ही सम्पन्न करेंगे परन्तु इसी परिपेक्ष्य में तीर्थ या धार्मिक यात्राओं को सम्पन्न कर सकते हैं। बन्धु एवं मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे

इच्छित लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप विद्वान बुद्धिमान एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा आनंद पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में लग्न में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ विव्रम शांत एवं हास्य प्रवृति से युक्त होते है। वे बुद्धिमान होते है तथा उनके मुख पर बुद्धिमता की झलक स्पष्ट परिलक्षित होती है परन्तु यदा कदा चंचलता का भाव भी इनमें पाया जाता है ये स्वाभिमानी महिला होते हैं तथा स्वपरिश्रम योग्यता एवं पराक्रम से जीवन में वांछित सफलताएं अर्जित करते हैं तथा सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों को प्राप्त करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। संगीत एवं कला के प्रति इनकी अभिरूचि रहती है तथा नए सिद्धांतों एवं मूल्यों का प्रतिपादन करने में भी समर्थ रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा अपने समस्त सांसारिक महत्व के कार्यों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी। इससे समाज में आपके मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप में सहिष्णुता तथा उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः अवसरानुकूल सुख दुःख में अन्य लोगों को अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगी।

मित्रों के प्रति आपके पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके नित्य सम्पर्क रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य लोग आपसे आकर्षित एवं प्रभावित रहेंगे। लेखन गणित तथा व्यापारिक कार्यों में आपके विशेष रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से इन क्षेत्रों में इच्छित उन्नति प्राप्त करके अपना जीवन यापन करेंगी।

लग्न में लग्नेश बुध की राशि के प्रभाव से आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके वाणी भी मधुर होगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का उपयोग करेंगी एवं अपने वाक्चातुर्य से अपने कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ होंगी। आपका स्वभाव परिश्रमी होगा तथा परिश्रमपूर्वक आप अपने उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगी जिससे समाज या कार्यक्षेत्र में आप एक सम्मानित महिला समझी जाएंगी।

जीवन में इच्छित धनैश्वर्य एवं वैभव को अर्जित करने में आप समर्थ होंगी तथा आयस्रोत भी आपके एक से अधिक होंगे फलतः आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी संगीत कला साहित्य एवं अन्य शास्त्रों पर आपका अधिकार रहेगा तथा अपनी उत्साही एवं पराक्रमी प्रवृति से आप इनमें इच्छित यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होने की संभावना रहेगी। साथ ही कृषि या जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप जीवन में अर्जित कर सकते हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। आप एक सुशील महिला होंगी तथा नैतिकता का अनुपालन करने में सदैव तत्पर रहेंगी। अतः अन्य जन आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे

तथा एक सम्मानित महिला के रूप में आपका अपने क्षेत्र में प्रभाव रहेगा।

इस प्रकार आप परिश्रमी, उत्साही, साहसी एवं पराक्रम के भाव से युक्त होकर सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

Mr.

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़े रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगे। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्नपूर्वक संसाधनों को अर्जित करेंगे परन्तु यदाकदा अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को आप पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगे तथा पहले अपनी ही इच्छा को पूर्ण करेंगे। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आप हमेशा सजग रहेंगे तथा यत्न पूर्वक घर का आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपके मित्र भी गुणवान तथा शिक्षित होंगे।

विभिन्न प्रकार के स्वादों का आस्वादन करने के आप इच्छुक रहेंगे। साथ ही मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रूचि रहेगी। सामान्यतया आप सुन्दर एवं सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन ही करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन करते रहेंगे। साथ ही कीमती आभूषणों या धातुओं को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपकी वाणी भी ओजास्विता के भाव से युक्त रहेगी लेकिन यदा कदा मधुरता की न्यूनता होगी। आप घर में समय समय पर धार्मिक कार्य कलाप या अन्य प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते रहेंगे। साथ ही आप किसी उत्सव के आयोजन को हाथ से नहीं जाने देंगे तथा अवश्य उसमें भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त नीति के आप ज्ञाता होंगे तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Ms.

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय में कर्क राशि स्थित है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप एक भावुक प्रवृति की होंगी तथा यदा कदा अधिक वार्तालाप भी करेंगी। समाज में आप एक सम्मानीया महिला रहेंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी स्पष्ट एवं मधुर रहेगी जिससे सम्मुख व्यक्ति आपसे प्रभावित रहेगा। साथ ही अपने विचारों को बिना किसी असुविधा के अन्य लोगों के समक्ष प्रस्तुत करेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे ।

पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि आपकी उत्तम रहेगी तथा परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही संतति से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की समय समय पर प्राप्ति होती रहेगी। आप सामान्यतया सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन करने में रूचिशील रहेंगी लेकिन मिष्ठान आपका विशेष प्रिय रहेगा परन्तु इसके अधिक उपयोग से आपको कोई शारीरिक परेशानी भी हो सकती है अतः इसका अधिक मात्रा में उपयोग कम ही करें। परिवार में आप समय समय पर धार्मिक या मांगलिक उत्सवों का भी आयोजन करती रहेंगी। आप अपने विचारों की पुष्टि के लिए हमेशा ठोस तर्को को प्रस्तुत करेंगी जिससे लोग

आपसे प्रभावित तथा सहमत रहेंगे। पुत्रों का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आपकी सेवा तथा सहयोग में सदैव तत्पर रहेंगे। अतः आप सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

Mr.

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। इसके प्रभाव से आप सतर्क, सक्रिय तथा बौद्धिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी उत्तम रहेगी एवं आसानी से किसी वस्तु को भूल नहीं पाएंगे। भाई बहिनों के सुख एवं सहयोग को प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही वे भी साहसी एवं परोपकारी होंगे एवं आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। वे महत्वाकांक्षी भी होंगे तथा आपके पूर्ण विश्वास पात्र तथा आज्ञाकारी रहेंगे। पारिवारिक शान्ति एवं परस्पर सौहार्द के भाव को रखने के लिए समय समय पर आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे जिससे तनाव एवं मतभेदों में न्यूनता रहेगी।

आप नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न रहेंगे तथा समाज में सभी लोग आपकी संगठन शक्ति से प्रभावित होंगे तथा आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप स्वच्छन्द प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा दार्शनिक स्वभाव ईमानदार तथा स्पष्टवादिता आपके प्रमुख गुण रहेंगे। अतः इनके प्रभाव से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा समाज में प्रभावशाली पद को अर्जित करेंगे। आधुनिक संचार सुविधाओं का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। जैसे टेलीफोन टेलीविजन वाहन या अन्य साधन आपको सर्वदा उपलब्ध रहेंगे। संगीत एवं कला के प्रति आपका विशेष लगाव रहेगा तथा समय समय पर आप इनसे मनोंरजन करके मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। जीवन में दूर समीप की यात्राओं से आप लाभ एवं ख्याति अर्जित करेंगे तथा यात्रा के मध्य आपके कई मित्र भी बनेंगे। ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों के अध्ययन में भी आपकी रूचि रहेगी इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग के मित्र, प्रतापी, आतिथ्य सत्कार करने वाले, दानी यशस्वी विद्धान तथा अच्छे विचारों से सर्वदा युक्त रहेंगे ।

Ms.

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आदर्श, विशाल हृदय एवं साहसी महिला होंगी। आपका अपने संबंधियों, मित्रों एवं भाई बहिनों के प्रति पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी तथा उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी । पारिवारिक शान्ति एवं समृद्धि के लिए उनकी गलतियों को भूलने की सीमा तक क्षमा कर देंगी। इस राशि के प्रभाव से आप प्रशासनिक या कोई उच्चाधिकार प्राप्त पद अर्जित करने में समर्थ हो सकती हैं। इसके साथ ही भाई बहिनों से आज्ञा पालन तथा कर्तव्य परायणता के भाव की सर्वदा अपेक्षा करेंगी यदि वे ऐसा नहीं करते तो आप अत्यंत ही क्रोध का प्रदर्शन भी करेंगी।

आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा आपकी स्मरण शक्ति अत्यंत ही तीक्ष्ण रहेगी तथा किसी भी बस्तु को एक बार देख या उसके बारे में सुनकर उसे काफी समय तक याद

रखेंगी। उच्च शिक्षा, दर्शन शास्त्र या लेखन संबधी कार्यों में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक इनका अध्ययन करने में तत्पर रहेंगी। आधुनिक संचार साधनों यथा टेलीफोन, दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहेगी एवं आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप नीति संबंधी ज्ञान भी रखेंगी तथा समाचार पत्र पत्राचार या लेखन से भी आपको लाभ होगा। संगीत के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा अवसरनुकूल इससे अपना मनोरजंन करेंगी। आपकी दूर समीप की यात्राएं भी समय समय पर होती रहेंगी तथा इससे आपको ख्याति तथा धनार्जन भी होगा। प्रकाशन के क्षेत्र में भी आपकी रूचि रहेगी। इसके अतिरिक्त एक योग्य सूचना अधिकारी या संवाददाता के रुप में भी सफल हो सकती हैं।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

Mr.

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा राहु भी उच्चराशि में होकर चतुर्थभाव में ही बैठा है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको वांछित सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से युक्त होकर सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। समाज में भी आपका यथोचित स्तर रहेगा एवं सभी लोग प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे।

आप एक भाग्यवान व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा। नाना या नानी से आपको वांछित मात्रा में चल या अचल सम्पत्ति की प्राप्ति के भी योग बनते है। आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से भी वांछित अचल सम्पत्ति अर्जित करेंगे। आपको चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः इस पर आप अवसरानुकूल निवेश कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त विवादित सम्पत्ति से भी आपको दूर ही रहना चाहिए।

आपका आवास सुन्दर, विस्तृत एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित होगा। इसकी स्वच्छता एवं आकर्षण में आप विशेष रूचि लेंगे तथा अन्य जनों को भी प्रोत्साहित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी युक्त होंगे तथा युवावस्था से ही आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य कलापों से परिवार की सुख समृद्धि में वृद्धि करके सभी सदस्यों को प्रभावित तथा प्रसन्न रखने में समर्थ होंगी। जिससे परिवार के सभी सदस्य उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समयानुसार वे आपको अपनी ओर से नैतिक तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें कोई कष्ट नहीं होने देंगे लेकिन सैद्धांतिक मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में मधुरता की कमी हो सकती है जिसकी आपको उपेक्षा करनी चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि होगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंको में परीक्षाएं उतीर्ण करेंगे। आपको स्नातक परीक्षा में भी अच्छी श्रेणी प्राप्त होगी जिससे आपका भविष्य उज्ज्वल होगा एवं मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप तकनीकी या न्याय संबंधी पाठ्यक्रम में उच्च शिक्षा या डिग्री भी प्राप्त कर सकते है।

चतुर्थभाव में राहु के प्रभाव से मध्यावस्था में आपको रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी की अनुभूति हो सकती है। अतः यदि प्रारंभ से ही खान-पान का विशेष ध्यान रखें तथा

मानसिक तनाव से दूर रहें तो ऐसी समस्याओं में न्यूनता आ सकती है तथा आप प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत कर सकते है।

Ms.

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा सूर्य भी प्रथम भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप आवश्यक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों आदि से युक्त होंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। तृतीयेश सूर्य की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से सुख-संसाधनों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तथा इच्छित सुखों की प्राप्ति भी किंचित विलम्ब से होगी लेकिन समृद्धि को बनाए रखने में समर्थ होंगी।

आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में चल तथा अचल सम्पत्ति से युक्त रहेंगी। पिता के द्वारा अर्जित धन संपत्ति को आप प्राप्त करेंगी। इससे आपके वैभव एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा आर्थिक स्थिति में भी सुदृढ़ता आएगी। आप अपनी विद्वता बुद्धिमता एवं पराक्रम से भी अतिरिक्त रूप से चल एवं अचल संपत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी।

जीवन में आपका गृह सुख उत्तम रहेगा तथा अच्छे सुसज्जित घर को प्राप्त करेंगी। आपका घर अच्छी कालोनी में होगा तथा पडोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं उनसे संबंधों में मधुरता रहेगी। सूर्य की स्थिति के प्रभाव से आपको सरकारी आवास की भी प्राप्ति हो सकती है। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी अच्छा होगा तथा वाहन का सुखपूर्वक उपभोग करेंगी।

आपकी माता जी बुद्धिमान तेजस्वी एवं शिक्षित महिला होंगी तथा पारिवारिक जनों पर उनका पूर्ण नियंत्रण रहेगा। परिवार में सभी लोग उनको पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगे। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अपनी व्यावहारिकता से वे अन्य जनों को भी प्रभावित करेंगी। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको नैतिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप भी उनके आज्ञाकारी होंगी एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रहेंगी फलतः आपसी संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही आप रूचिशील होंगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंको को अर्जित करके परीक्षाएं उतीर्ण करेंगी। इस प्रकार अपनी बुद्धिमता परिश्रम एवं योग्यता से आप ससम्मान स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में समर्थ होंगी। इससे आपका भविष्य उज्ज्वल होगा एवं मन में आत्म विश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

नैसर्गिक तेजस्वी ग्रह सूर्य के चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से वृद्धावस्था में आप न्यूनाधिक रूप से रक्त चाप संबंधी परेशानी की अनुभूति करेंगी। तथा यदा कदा हृदय संबंधी कष्ट भी हो सकता है। अतः यदि आप प्रारंभ से ही ऐसे पदार्थो का सीमित उपयोग करें तो ऐसी परेशानियों से आपको मुक्ति मिल सकती है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

Mr.

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर स्पष्ट रूप से बुद्धिमता की छाप विद्यमान होगी जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान राजनीति, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र के भी आप ज्ञाता होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि होगी परन्तु आपका प्रेम उच्चादर्शो से युक्त होगा तथा उसमें मर्यादा, नैतिकता एवं यर्थाथवादी भाव विद्यमान होगा। इसमें भावनात्मक आकर्षण की भी प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करके सम्मान जनक स्तर प्राप्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना परम कर्तव्य समझेंगे। वे माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास की भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा उनके माध्यम से ही वे अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में तन-मन-धन से माता-पिता की सेवा करेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे इससे आपको बच्चों पर गर्व की अनुभूति होगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में वे विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगे। फलतः बच्चे योग्य बनकर आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य-कलापों से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित करके उनसे स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपको जीवन में संतति का वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

Ms.

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी शुक्र है। बुध भी लग्नेश होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगीं। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान आप अपनी बुद्धि से करने में समर्थ होंगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में भी आपकी रुचि होगी तथा इन ग्रंथों का अध्ययन करके वांछित मात्रा में ज्ञान अर्जित करेंगी। बुध के प्रभाव से साहित्य या कविता लेखन, गणित एवं ज्यौतिष शास्त्र का ज्ञान भी आपको होगा तथा इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि भी अर्जित कर सकती हैं जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा एक विदुषी के रूप में आपकी प्रतिष्ठा होगी ।

शुक्र की राशि में पंचमभाव में बुध के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी परंतु आपका प्रेम आदर्शवाद एवं मर्यादा की सीमा में होगा तथा इसको आप केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का समाधान नहीं मानेगे। अतः आपका प्रेम प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या पुत्र से अधिक होगी लेकिन सभी बच्चे बुद्धिमान एवं गुणवान होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से जीवन में उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के वे आज्ञाकारी होंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे जिससे परस्पर सद्भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनमें विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्या का समाधान माता से ही करवाना अधिक पसंद करेंगे लेकिन मान सम्मान एवं श्रद्धा का भाव माता पिता के प्रति समान रूप में रहेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे आशातीत उन्नति करेंगे तथा अच्छे अंको से अपनी परिक्षाओं को उत्तीर्ण करके उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। वे उच्च पदों पर भी नियुक्त हो सकते है। इसके वे स्वभाव से विनम्र एवं व्यवहार कुशल होंगी तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे जिससे आपके सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अपने बच्चों पर आपको गौरव होगा तथा वे भी वृद्धावस्था में आपकी श्द्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

Mr.

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप रक्त सम्बन्धियों से समय समय पर विरोध का सामना करेंगे साथ ही उनसे आपको अनुकूल सहयोग भी नहीं मिलेगा। आपके उत्कृष्ट कार्य कलापों से उनके मन में ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होगी। साथ ही यदा कदा वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध के कारण भी आपको कार्य क्षेत्र में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके शत्रु उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति होंगे जो समाज या सरकार के विभिन्न क्षेत्रों से रहेंगे तथा वे हमेशा आपके मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए तत्पर रहेंगे। लेकिन आप अपनी बुद्धिमता, चतुराई शक्ति तथा अन्य गुप्त सूत्रों से उनका सामना तथा पराजित करने में सफल सिद्ध होंगे।

सेवक वर्ग की सेवा प्राप्त करने के लिए आप प्रायः उत्सुक रहेंगे तथा इनके बिना आपके कई कार्य पूर्ण भी नहीं होंगे। आपके नौकर अच्छे होंगे तथा आपकी इच्छा के अनुसार कार्य करने में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे लेकिन वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य जनों के समक्ष उजागर करेंगे। साथ ही वे यदा कदा चोरी आदि करने के लिए भी तत्पर हो सकते हैं। अतः कीमती वस्तुओं को उनकी पहुँच से बाहर रखना चाहिए। आप अपने उच्च स्तर को बनाने के लिए अनावश्यक व्यय करेंगे यह व्यय आपकी आय से अधिक होगा। यद्यपि आप सोच समझकर व्यय करेंगे परन्तु यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है लेकिन समय पर वापस न करने में आपके मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः ऋण आदि लेने की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

मामा मामियों से आपको समय समय पर इच्छित सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आपकी वे पूर्ण रूप से सहायता करते रहेंगे परन्तु कभी कभी वे सवर्थवश आपकी मदद करेंगे जिससे आपके स्वाभिमान को ठेस पहुंचेगी। दीवानी या फौजदारी मुकद्दमों में आप सामान्यतया धन तथा समय की ही बर्बादी करेंगे। लेकिन यदि आप नियमानुसार इन कार्यो को करेंगे तो इनमें आपको इच्छित लाभ तथा विजय प्राप्त हो सकती है । साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के खान पान का उचित ध्यान रखना चाहिए तथा गर्म पदार्थो की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए ।

Ms.

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप अनावश्यक चिन्ताओं तथा उत्तेजनाओं से अपने स्वास्थ्य को प्रभावित करेंगी। साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के लिए आपको सीमित रूप से ही परिश्रम करना चाहिए क्योंकि क्षमता से अधिक कार्य करना आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। सामान्य रूप से आप वात पितोत्पन्न जुकाम आदि से कष्ट प्राप्त करेंगी एवं वृद्धावस्था में श्वास आदि से कोई परेशानी भी हो सकती है। इसके साथ ही जोड़ों के दर्द से भी किंचित परेशानी की आपको अनुभूति होगी। अतः स्वास्थ्य के प्रति विशेष सतर्क रहें।

मंगल एक तेजस्वी तथा उग्र ग्रह है अतः आपको कभी भी अनावश्यक रूप में अपने वार्तालाप में कठोर शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए तथा यत्नपूर्वक मधुर वाणी ही बोलनी चाहिए अन्यथा आपको कई प्रकार से समस्याओं का सामना करना पड़ेगा आपके उन्नति मार्ग में शत्रु हमेशा व्यवधान उत्पन्न करेंगे अतः आपका जीवन अत्यंत ही परिश्रम पूर्ण रहेगा। आप बन्धु मित्र एवं सरकारी अधिकारियों से शत्रुता या विरोध का सामना कर सकती हैं परन्तु अपनी चतुराई, बुद्धिमता तथा वाक्चातुर्य से शत्रुपक्ष या विरोधियों का दमन करने में समर्थ रहेंगी तथा आपकी परेशानियां भी दूर होंगी।

आपके अधिकाशं नौकर भी उग्र स्वभाव के होंगे तथा आपकी गुप्त बातों को वे अन्य जनों से कहकर आपके मान सम्मान में न्यूनता करेंगे। अतः आपको इन पर पूर्ण निगरानी रखनी चाहिए तथा उनके सामने कोई भी व्यक्तिगत वार्तालाप नहीं करना चाहिए। आप जीवन की खुशहाली पर अधिक व्यय करेंगी तथा इसी व्ययधिक्य के कारण आपकी आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है जिससे आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है अतः सोच समझकर ही व्यय करना चाहिए।

मुकद्दमेबाजी की आपको जीवन में यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि इससे आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मामा मामी से भी आपको इच्छित सुख अल्प मात्रा में प्राप्त होगा तथापि आपको उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। साथ ही आपको अधिक मिष्ठान की उपेक्षा करनी चाहिए जिससे आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

Mr.

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी प्रियवक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यशाली एवं विविध कार्यो में दक्ष होता है तथा वह शिक्षित विद्वान प्रसिद्ध सांसारिक कार्यो में दक्ष एवं कर्तव्य परायण होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की विनम्र एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने संभाषण हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगी साथ ही वह स्वच्छता प्रिय होंगी एवं सफाई के प्रति विशेष सजग होंगी सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह चतुर होंगी। साथ ही उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी होगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सडोलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा शरीर भी आकर्षक रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति भी उनकी रूचि होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से आपका विवाह बंधु एवं संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति सम्मान आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को आप परस्पर सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे जिससे आपस में विश्वास एवं समानता का भाव उत्पन्न होगा। इससे दाम्पत्यों संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह मिलेगा। साथ ही आप भी उन्हें पूर्ण सम्मान देंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी भी सलाह लेंगे जिससे आपस में विश्वसनीयता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का हार्दिक सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी माता पिता के समान सेवा करेंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्‌व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी जिससे परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के समीपस्थ संबंधी से साझेदारी की जाए तो इससे शुभ फल प्राप्त होंगे एवं परस्पर विश्वसनीयता भी बनी रहेगी ।

Ms.

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा मंगल भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया धनु राशि की सप्तम भाव में स्थिति के फलस्वरूप जातक का सहयोगी पुष्ट शरीर युक्त बुद्धिमान एवं कुशल कार्यकर्ता होता है लेकिन अग्नि तत्व ग्रह मंगल के प्रभाव से उसमें सहिष्णुता के भाव में कमी रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति बुद्धिमान तेजस्वी एवं साहसी व्यक्ति होंगे तथा स्वपराक्रम से अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। साथ ही सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह दक्ष होंगे। अग्नितत्व युक्त मंगल के प्रभाव से उनमें स्वाभिमान के भाव की प्रबलता एवं सहिष्णुता की न्यूनता रहेगी जिससे वे शीघ्र ही उत्तेजित भी हो जाया करेंगे परन्तु धनुराशि के प्रभाव से कर्तव्य परायणता का भाव विद्यमान रहेगा।

आपके पति लालिमा लिए गौरवर्ण के व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी मध्यम होगा साथ ही शारीरिक पुष्टता बनी रहेगी तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। उच्च कोटि के साहित्य एवं कला के प्रति उनकी रूचि होगी तथा समयानुसार वे इस पर अपना समय व्यतीत करेंगे।

सप्तम भाव में मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा परन्तु उसमें परेशानियां नहीं होगी। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा। साथ ही बन्धु या संबंधी भी इस कार्य में अपना योगदान प्रदान कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा परन्तु पति की तेजस्विता की वृति से यदा कदा आपसी वाद विवाद के द्वारा समस्याएं उत्पन्न होंगी परन्तु ऐसे समय पर आप शांति एवं बुद्धिमता से कार्य लेंगी फलतः समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगी।

आपका ससुराल किसी अच्छे परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक मान प्रतिष्ठा की दृष्टि से वे समृद्ध होंगे। विवाह के बाद भी उनसे आर्थिक एवं नैतिक सहयोग मिलता रहेगा। सास ससुर से आपके संबंध सामान्यतया अच्छे रहेंगे तथा आपस मतभेदों के होते हुए भी सामंजस्य बना रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपके पति का विशेष सेवा भाव कम ही होगा तथा सुख दुख में उन्हें यथोचित सहयोग प्रदान नहीं करेंगे। साले एवं सालियां भी उनके तेजस्वी स्वभाव से असन्तुष्ट रहेंगे एवं उनसे वांछित सहयोग एवं सम्मान नहीं मिलेगा।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं होगी तथा इससे आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः जब तक अत्यावश्यक न हो साझेदारी की उपेक्षा ही करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

Mr.

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म तथा ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में विश्वास करेंगे। साथ ही आपकी पूर्वाभास तथा अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी जिससे आप सही रूप से भविष्यवाणियां करने में समर्थ हो सकेंगे। इस क्षेत्र में आपकी काफी रूचि रहेगी तथा प्रयत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करेंगे एवं इसमें शोधकार्य भी सम्पन्न कर सकते हैं। इससे आपको धनार्जन भी होगा एवं समाज में आपको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। साथ ही इससे आपके मित्रों की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा कई आध्यात्मिक एवं पराविद्या वेता आपके मित्र होंगे ।

आपको पैतृक सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी तथा इससे आपको काफी लाभ होगा। साथ ही जमीन जायदाद के कार्य से आपको समय समय पर लाभ भी होता रहेगा। आपके कार्य से लोग सामान्यतया प्रसन्न रहेंगे तथा आपको मुंह मांगा दाम देंगे। शादी से भी आपको उचित लाभ होगा तथा किसी प्रकार से जायदाद की प्राप्ति भी हो सकती है। इसमें आपको दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन आभूषण एवं अन्य आधुनिक उपकरण उपहार स्वरुप प्राप्त होंगे। इससे आप तथा आपकी पत्नी ससुराल वालों के प्रति कृतज्ञ रहेंगे। बीमे आदि से भी आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः न्यूनाधिक रूप से आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी या दुर्घटना के कोई विशेष अवसर नहीं आएंगे। यदि कोई ऐसी घटना घट भी गई भी तो उसका मामूली प्रभाव होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा उत्तम स्वास्थ से युक्त होकर आप अपना सामान्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप व्यावहारिक तथा आधुनिक विचार धारा की महिला होंगी फलतः अध्यात्म, ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति आपकी कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा जीवन में अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगी। अतः आप काफी व्यस्त रहेगी तथा मित्रों के कहने पर भी उपरोक्त विषयों के प्रति आपके मन में कोई रूचि उत्पन्न नहीं होगी। आपको प्रचुर मात्रा में पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा शनैः शनै इसका विस्तार करने में समर्थ रहेंगी। इस प्रकार अपनी मेहनत एवं कार्यकौशल से आप एक धनवान महिला कहलाएंगी। लेकिन जीवन में जुए या सट्टे आदि की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आवश्यक सुख सुविधाओं का उपभोग करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही ससुराल भी आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न रहेगा। बीमा आदि करने से भी आपको लाभ होगा अतः मकान गाड़ी या अन्य वस्तुओं का आपको बीमा अवश्य कराना चाहिए। यद्यपि इनमें आपको हानि अधिक नहीं होगी परन्तु बीमे से प्रचुर मात्रा

में धन प्राप्त हो जाएगा। जीवन में आपकी कुंडली के अनुसार कोई चोरी या दुर्घटना का योग नहीं बनता है तथापि इनके प्रति आपको आवश्यक रूप से सतर्कता का पालन करना चाहिए। आपकी प्रवृत्ति काफी सजग रहेगी फलतः परेशानियों से सुरक्षित रहेंगी। आपकी आयु भी अच्छी होगी तथा सामान्यतया आपका सांसारिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

Mr.

आपके जन्म समय में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से प्रारंभ में धर्म के प्रति आपके मन में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी लेकिन आयु के साथ साथ आप मन्दिर या तीर्थ स्थानों पर जाकर धार्मिक कार्य कलाप सम्पन्न करेंगे तथा दैनिक पूजा को भी आरम्भ करेंगे। भाग्य आपके लिए प्रायः सहायक रहेगा। लम्बी यात्राओं के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा अध्यात्म, ज्यौतिष या तंत्र मंत्र संबंधी शास्त्रों में भी आपकी रूचि रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक संबधित ग्रंथों का अध्ययन करके इसका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप अपने निवास स्थान में पूजा स्थल का भी निर्माण करवायें। परोपकार संबंधी कार्यो तथा भगवान के प्रति पूर्ण श्रद्धा रहेगी। इसके साथ ही आप कई शुभ कार्य कर्मो को सम्पन्न करेंगे तथा हमेशा प्रसन्नचित रहेंगे।

युवावस्था में आप ध्यान, योगादिक्रियाओं में भी रूचि लेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनको सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे संबंधित ग्रंथों को पढ़ेंगे। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी जिससे आपको पूर्वाभास या भविष्य संबंधी जानकारियां हो सकती है। आप अपने जीवन में निश्चय ही कोई धार्मिक एवं पुण्य संबधी कार्य को सम्पन्न करेंगे जैसे मंदिर अस्पताल या तालाब आदि का निर्माण। साथ ही अन्यत्र भी दानादि कार्य करते रहेंगे। प्रारंभिक अवस्था में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न कर सकते है । ये यात्राएं शिक्षा संबंधी भी हो सकते है या व्यापारिक एवं धार्मिक कार्य संबंधी भी लेकिन इनसे आपको सम्मान लाभ एवं ख्याति अवश्य प्राप्त होगी तथा समाज में अपने सत्कर्मों के लिए जाने जाएंगे। वृद्धावस्था में पौत्रों से आपको सौभाग्य, सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्मों के पुण्य के प्रभाव से आपका यह जीवन सुख एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

Ms.

आपके जन्म समय में नवम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा धार्मिक साहित्य का रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगी साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी हमेशा रूचि तथा प्रयत्नशील रहेंगी। आप किसी विशिष्ट सिद्धि या उपलब्धि को अर्जित करने के लिए जीवन में सर्वदा यत्नशील रहेंगी जिसके द्वारा आपको समाज में मान सम्मान धन एवं ख्याति अर्जित होगी इसके साथ ही ज्यौतिष या तंत्र मंत्र के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा आपको इसका न्यूनाधिक ज्ञान अवश्य रहेगा।

ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास रहेगा अतः कई बार आप कार्य की अपेक्षा भाग्य को अधिक महत्व प्रदान करेंगी। आपके विचार से भाग्य की प्रबलता के बिना कोई भी सफलता असंभव सी है तथा सौभाग्य से ही मनुष्य जीवन में विशिष्ट सफलताएं अर्जित कर सकता है। साथ ही अपने इष्टदेव की नियमित पूजा करेंगी तथा परिवार में समय

समय पर धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न करती रहेंगी। आपके विचार में ऐसा करने से बच्चों के संस्कारों में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त समय समय पर तीर्थ यात्राएं भी करेंगी तथा साधु महात्माओं की संगति से आपको प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि प्राप्त होगी।

आपकी व्यावसायिक तथा आनन्ददायक लम्बी दूरी की यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा इनसे आपको काफी ज्ञानार्जन भी होगा। साथ ही आतिथ्यभाव भी आप में विद्यमान रहेगा। पौत्रों से भी आपको इच्छित सुख प्राप्त होगा। वास्तव में आप इस जीवन में जो भी आनंद या उपलब्धि अर्जित करती है वह पूर्व जन्म के पुण्यों का ही प्रभाव है। इसके अतिरिक्त दैवी कृपा से धनार्जन करेंगी तथा रास्ता, बगीचा या तालाब तथा मन्दिर आदि परोपकार संबंधी कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

Mr.

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनुराशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही केतु भी दशमभाव में स्थित है। धनु राशि अग्नितत्व एवं केतु वायुतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। इसके अतिरिक्त आप किसी या व्यवसाय के इच्छुक होंगे तथा इसमें आपको सफलता भी प्राप्त होगी।

दशमभाव में धनुराशिस्थ केतु के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र वायुसेना, एयरलाइंस, बैंक क्षेत्र, फैक्टरी या ऊनी उद्योग, खनिज एवं खान विभाग तथा राजनीति अनुकूल रहेगी। साथ ही पराक्रमी क्षेत्र में भी आप वांछित उन्नति प्राप्त कर सकते है। यदि आप उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करें तो आपको इच्छित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक दृष्टि से फैक्टरी, ऊनी उद्योग, एयर ट्रैवल एजेंसी, लोहे का कार्य, खेती, बागवानी, पैट्रोल पम्प, खाद्य सामाग्री आदि के व्यापार से वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः व्यापार के लिए उपरोक्त क्षेत्रों का ही चयन करें ।

दशमभावस्थ केतु के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा मिलेगी तथा स्वपराक्रम एवं बुद्धिमता से आप कोई उच्चाधिकार प्राप्त सम्मानित पद को भी अर्जित करेंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके यथोचित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपको प्रसिद्धि भी व्याप्त होगी। आप किसी सामाजिक, शैक्षणिक या क्लब आदि के भी सम्मानित सदस्य हो सकते है। इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित अपनी उपलब्धियों से संतुष्ट रहेंगे।

आपके पिता पराक्रमी, तेजस्वी एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे। साथ ही अपने उत्तम कार्यो क्लापों से वे अन्य जनो को संतुष्ट एवं प्रसन्न करने में समर्थ होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा एवं उच्चशिक्षा के प्रति वे विशेष प्रयत्नन करेंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र की आरंभिक सफलता एवं उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा। आप भी परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा पिता के सम्मान में भी वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परंतु यदा कदा वैचारिक एवं सैद्धांतिक मतभेद उत्तम हो सकते है। इसके अतिरिक्त आप में आज्ञाकारिक्ता का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं महत्व पूर्ण कार्यो को आपसी सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे।

Ms.

आपकी जन्म कुंडली में दशम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है मीन राशि जलतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रम की इसमें अल्पता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप समय समय पर कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की भी इच्छुक हो सकती है लेकिन ये परिवर्तन वर्तमान एवं भविष्य के लिए लाभदायक ही होंगे।

आजीविका की दृष्टि से आप शिक्षक या व्याख्याता, धर्मोपदेशक, प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर तथा सरकारी विभाग में सचिव सलाहकार या प्रशासनिक पद पर कार्य कर सकती है। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा भविष्य में भी आप किसी उच्चपद या अधिकार को अर्जित करने में सफल होंगी। अतः आपको इन्हीं क्षेत्रों में यत्नपूर्वक अपनी आजीविका प्रारंभ करनी चाहिए। इससे आपकी मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी।

व्यापारिक क्षेत्र में भी बृहस्पति की स्वगृही दशम स्थिति से आप वांछित उन्नति प्राप्त करने में समर्थ हो सकती है। आप सुवर्ण आदि का व्यापार, शेयर का क्रय विक्रय, वित्त कम्पनियों में पूंजी निवेश आदि से वांछित लाभ की प्राप्ति कर सकती है। साथ ही सरकारी टेन्डरो या सरकार से संबंधित कार्यो से भी आप प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगी। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का शुभारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको उच्च मान सम्मान तथा पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश सर्वत्र व्याप्त होगा। साथ ही आप धार्मिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था में भी किसी उच्च पद को प्राप्त कर सकती है। बृहस्पति की केंद्र भाव की यह स्थिति आपके लिए अत्याधिक शुभफलदायक होगी। अतः आपको ईमानदारी एवं बुद्धिमता से अपने कार्यक्षेत्र में तत्पर रहना चाहिए।

आपके पिता विद्वान शिक्षित बुद्धिमान एवं मधुर स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः सभी लोग उनसे प्रभावित होंगे तथा उन्हें उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी शिक्षा दीक्षा का वे उच्चस्तर पर प्रबंध करके आपको प्रभावशाली व्यक्ति बनाने में पूर्ण रूप से तत्पर होंगे। उनके प्रभाव से आप कार्यक्षेत्र में विशिष्ट सफलता प्राप्त करेंगी तथा यश की भी प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी उनकी अभिलाषाओं को पूर्ण करने में समर्थ होंगी। आप दोनों के परस्पर मधुर संबंध रहेंगे तथा आपस में उचित सामंजस्य रहेगा जिससे किसी भी प्रकार की मत वैभिन्यता नहीं रहेगी तथा जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

Mr.

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप किसी भी कार्य को सोच समझकर तथा व्यापारिक दृष्टि से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मानसिक शक्ति की भी आप में प्रबलता रहेगी। प्रबन्ध एवं संगठन शक्ति भी आप में विद्यमान रहेगी तथा एक पराक्रमी परिश्रमी तथा योग्य व्यक्ति होंगे अतः जीवन में अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप एक दूरदर्शी एवं महत्वाकांक्षी पुरूष भी होंगे तथा प्रसिद्ध धन-ऐश्वर्य एवं मान सम्मान अर्जित करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे । जीवन में उन्नति या लाभार्जन का आप कोई भी अवसर नहीं छोड़ेगे फलतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी तथा आय स्रोतों में नित्य वृद्धि होगी जिससे प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में आप किसी भी प्रकार का खतरा नहीं उठाएंगे। लकड़ी या लोहे से संबंधित व्यापार या कार्य से आप विशिष्ट लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से जीवन में विशिष्ट लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा वे आपका पुत्रवत पालन करेंगी तथा समय समय पर मार्ग दर्शन भी करती रहेंगी। आपकी मित्रता स्थाई रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं होगा परन्तु मित्रवर्ग के मध्य आदरणीय विश्वसनीय तथा प्रतिष्ठा से युक्त रहेंगे। समाज में आपका स्तर उच्च रहेगा तथा सभी सामाजिक जनों से आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनकी सेवा तथा भलाई करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। अतः अपने क्षेत्र या समाज में आपको अच्छी ख्याति प्राप्त होगी लेकिन यदा कदा बाएं कान संबंधी परेशानी से आप कष्ट की अनुभूति कर सकते है परन्तु आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

Ms.

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा मन में इच्छाओं की बहुलता रहेगी। साथ ही इनकी पूर्ति अपने पराक्रम एवं परिश्रम के द्वारा अधिकाशं मात्रा में करने में सफल रहेंगी। आप में संगठनात्मक शक्ति विद्यमान रहेंगी तथा अन्य लोगों को नियंत्रित तथा संगठित करके उनसे कार्य करवाने में समर्थ रहेंगी। अतः आप प्रबन्धक, प्रशासनिक या रक्षा संबन्धी विभागों में कार्यरत हो सकती है अथवा जीवन में इनसे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होगा। यदि आप कार्यरत नहीं है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे। अतः आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा आर्थिक समृद्धि बनी रहेगी। साथ ही होटल आदि के व्यवसाय से आपको विशिष्ट लाभ की प्राप्ति होगी। बड़े भाईयों से जीवन में आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होगा तथा अपने स्नेह युक्त व्यवहार से आपको प्रसन्न रखेंगे तथा आप भी उनका पूर्ण मान सम्मान करेंगी।

आप अच्छी एवं अधिक मित्र मंडली को पसन्द करेंगी तथा आपके सभी मित्र उत्साही पराक्रमी निडर तथा शिक्षित रहेंगे। यद्यपि आप स्वछन्द प्रवृत्ति की महिला होंगी तथापि अन्य जनों के साथ कार्य करने में आपको प्रसन्नता की अनुभूति होगी। आप एक सामाजिक महिला होगी तथा क्षेत्र या समाज के सभी लोगों से आपके सम्पर्क रहेंगे तथा उनकी सेवा एवं भलाई करने के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगी फलतः समाज या क्षेत्र में विख्यात रहेंगी एवं जीवन में स्वपराक्रम से किसी विशिष्ट सामाजिक सम्मान को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी परन्तु यदा कदा बाएं कान की परेशानी से कष्ट प्राप्त होगा। लेकिन आपका सामान्य जीवन सुखऐश्वर्य से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

Mr.

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अच्छी व्यापारिक क्षमता रहेगी तथा धन एवं शक्ति से हमेशा युक्त रहेंगे। वृद्धावस्था में आप अपने बच्चो या किसी अन्य संबंधी पर आश्रित नहीं रहेंगे क्योंकि पहले से ही इस समय के लिए पूर्ण धन सुरक्षित रखेंगे। अन्य जनों के प्रति आपके मन में सहानुभूति रहेगी तथा यत्नपूर्वक उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से सहायता करते रहेंगे।

आपको मध्यमवस्था में पूर्ण धन मान एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा धन का आप बुद्धिमता एवं सावधानी पूर्वक उपयोग करेंगे। इस प्रकार आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। परिवार के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधा रहन सहन एवं पठन पाठन का स्तर बढ़ाने के लिए नित्य यत्नशील रहेंगे तथा ऐसे कार्यो पर आपका प्रचुर मात्रा में व्यय होगा। सांसारिक सुख संसाधनों तथा भौतिक उपकरणों के प्रति भी आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इन पर भी आप प्रचुर मात्रा में श्रवयय करेंगे। साथ ही आवास संबंधी साज सज्जा पर भी उपयुक्त व्यय होगा। जिससे आर्थिक स्थिति पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त दान या धार्मिक कार्य कलापों पर भी समय समय पर आपका व्यय होता रहेगा।

यात्राओं के प्रति भी आपकी रूचि बनी रहेगी तथा समय समय पर व्यवसाय या कार्य संबंधी याात्राएं होगी जिससे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापारिक तथा भ्रमण संबधी आपकी जीवन में विदेश यात्रा की भी संभावना रहेगी।

Ms.

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आपका जीवन सामान्यतया परिवर्तनशील रहेगा तथा सुखऐश्वर्य से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा विभिन्न स्रोंतो से आपका धनार्जन होगा लेकिन आपकी प्रवृति व्ययशील रहेगी तथा धन को आप उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगी। पारिवारिक जनों के स्तर खान-पान रहन सहन वस्त्रादि पर भी आपका व्यय अधिक होगा तथा भौतिक विलासमय साधनों पर भी आप दिल खोलकर व्यय करेंगी। साथ ही किसी ख्याति प्राप्त कम्पनी में पूंजी निवेश पर भी व्यय करेंगी जिससे भविष्य में आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा ।

भौतिक उपकरणों से आपका घर सुसज्जित रहेगा तथा इससे आपको हार्दिक प्रसन्नता एवं आनंद की अनुभूति होगी। आपकी जीवन में समय समय पर तीर्थ यात्राएं भी होती रहेगी तथा दूर समीप की यात्राएं भी सम्पन्न होगी। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या कार्य क्षेत्र से संबंधित रहेगी। साथ ही भ्रमण या पर्यटन स्थलों की भी सैर करने की उत्सुक

होंगी। यात्राओं में आप सक्रिय रहेंगी फलतः इससे उचित मात्रा में लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा।

आपकी विदेश संबंधी यात्रा भी सम्पन्न होगी एवं इससे आपका भविष्य उज्जवल होगा। साथ ही काफी समय तक विदेश में प्रवास भी कर सकती है। इससे खुशहाली, ऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

दशा विश्लेषण

Mr.

महादशा :- शनि
(16/11/2008 - 17/11/2027)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 16/11/2008 को आरम्भ और 17/11/2027 को समाप्त होगी।

शनि आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है और फल की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा करता है। फल प्राप्ति की दिशा में यह जातक को कठिन परिश्रम के लिए प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है, किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है। अतः यह एक 'कार्मिक' ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि आपकी जन्मकुण्डली के पांचवें, नवें और बारहवें भाव पर है और इन भावों पर इसका प्रभाव है। तृतीय भाव, जिसमें यह स्थित है, मानसिक अमिरुचि, बुद्धि, साहस, पराक्रम, छोटी यात्रा, संप्रेषण, हाथ, गले, बाँह तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

साहस तथा पराक्रम के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव को शक्ति प्रदान करता है। इसलिए इस दशा के दौरान आप स्वयं को साहसी और बहादुर अनुभव करेंगे और आपको कोई गम्भीर बीमारी अथवा स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि तृतीय अर्थात साहस, बुद्धि और अभिरुचि के भाव में स्थित है। फलतः आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके ऋणों का भुगतान होगा और आप आराम व विलास की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

बहादूर तथा साहसी होने के कारण आप तरंगी तथा निर्मम होंगे। आप स्थानीय बोर्ड, नगर निगम आदि के प्रधान या अध्यक्ष हो सकते हैं। आपको सफलता मिलने में कठिनाई होगी और लक्ष्य प्राप्ति में बाधाएं आएंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम और सद्भाव पूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपका सहयोग करेंगे। किन्तु, आपके भाई-बहन समस्याएं और कठिनाइयाँ खड़ी करेंगे जिनका सामना आप साहसपूर्वक करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए दशा अनुकूल है।

Ms.

महादशा :- शनि
(31/03/2016 - 01/04/2035)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपके जीवन में यह 31/03/2016 को आरम्भ और 01/04/2035 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 11वें भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो अधिकांश लोगों में आतंक उत्पन्न करता है। हर क्षेत्र में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करना इसकी प्रवृत्ति है। यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 11वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि प्रथम, पंचम तथा अष्टम भावों पर है और यह उनके कार्य को सम्पादित कर रहा है। 11वा भाव, जिसमें यह स्थित है, मित्र, समुदाय, महत्त्वाकांक्षाओं, कामनाओं तथा उनकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, लाभ, खुशहाली, बड़े भाई, भाग्योदय आदि का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी 11वें भाव में स्थित है और अपने भाव अर्थात् कामनाओं इच्छाओं की पूर्ति के भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। इस दशा के दौरान आपको किसी गम्भीर बीमारी अथवा दुर्घटना नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि की वर्तमानों दशा में आपकी इच्छाओं की पूर्ति, लाभ और धन का संग्रह होगा। आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा और जीवन के हर क्षेत्र में लाभ मिलेगा। किन्तु, आपके लक्ष्यों की पूर्ति में बाधाएं भी उत्पन्न करेगा जिन पर आप अपने भाइयों तथा मित्रों की सहायता से विजय प्राप्त करेंगे।

व्यवसाय :

आप व्यवसाय में सफल होंगे और सरकारी स्रोतों से धन का उपार्जन करेंगे। आपके राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने की अच्छी सम्भावना है जहाँ आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और पारिवारिक सुख-आनन्द का लाभ उठाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्च कम होंगे जो आज्ञाकारी होंगे और आपका आदर करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा के लिए यह दशा अनुकूल है। आप अपनी शिक्षा सफलता पूर्वक पूरी करेंगे और साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेंगे।

दशा विश्लेषण

Mr.

महादशा :- बुध
(17/11/2027 - 16/11/2044)

बुध की महादशा 17/11/2027 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 16/11/2044 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध बारहवें भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा थी। शनि के कारण आपका कुछ अप्रत्यशित परिवर्तन, साझेदारी में नुकसान तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी मामूली समस्या हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका व्यय होगा, शत्रुओं पर विजय तथा विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बुध की अपनी ही राशि में स्थिति के कारण आपको कोई गंभीर या बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु, विषाणुजन्य बुखार, संक्रामक बीमारी, आँखों तथा पैरों में पीड़ा, चर्मरोग तथा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको दूर स्थानों से लाभ होगा, किन्तु व्यय भी होगा। इसलिए अर्थ की उचित व्यवस्था आवश्यक है। आपको अपनी माता से कुछ लाभ हो सकता हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, अस्पताल का कार्य या अन्य दातव्य संस्थाओं, विमान-विज्ञान तथा सभी बौद्धिक कार्यो का चयन कर सकते हें। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर, हाथ के बने सामान यादि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की यात्रा, व्यवसाय-व्यापार में सफलता तथा सहयोगियों से सहयोग मिलेगा। आपके सम्मान में उन्नति होगी और आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों की यात्रा, धन तथा कठिन श्रम से लक्ष्य की प्राप्ति होगी। विदेश से कारोबार, विरोधियों पर विजय तथा व्यापार की उन्नति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको सुख तथा वाहन की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति का लेन-देन भी हो सकता है। आप जमीन-जायदाद खरीद या बेच सकते हैं। किन्तु बुध की अन्तर्दशा में सावधानी बरतें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और दूर की यात्राएं हो सकती हैं।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ शुभ परिवर्तन हो सकता है। इस दशा के दौरान आप कुछ शोध-परियोजनाएं आरम्म कर सकते हैं। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यवसाय और अन्तरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित विषयों में आपकी

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

रुचि हो सकती है। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है।

परिवार :

आपका परिवार के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के कार्य-क्षेत्र में परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्याएं, शत्रुओं पर विजय तथा कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल हो सकती है। जीवन साथी के साथ संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता को समृद्धि तथा पिजा को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जीवन वृत्ति सफल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपकी अध्यात्म में रुचि होगी और दान-पुण्य तथा शुभ कार्यों पर व्यय करेंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यय और यात्रा होगी और रोजगार के अवसर मिलेंगे। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में सुख तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा आनन्द की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल की अन्तर्दशा में शक्ति और अधिकार, जीविकापार्जन में सफलता तथा बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा में समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ नुकसान तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं होंगी।

Ms.

महादशा :- बुध
(01/04/2035 - 31/03/2052)

बुध की महादशा 01/04/2035 को आरम्भ और 17 वर्ष की होकर 31/03/2052 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध पंचम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, सफलता, उत्तम शिक्षा और धन की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी शिक्षा उत्तम होगी, सट्टे में लाभ तथा सन्तान से सुख मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, आशावादी तथा स्फूर्तिवान होंगे। आपको अक्सर पाचन क्रिया की शिकायत हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग तथा स्नायविक समस्या हो सकती है। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। सतर्कता बरतकर इन मामूली बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपको सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। आपको अचानक लाभ या अवकाश ग्रहणसे लाभ, ग्रेच्यूइटी आदि की प्राप्ति होगी। आपका निवेश शुभदायक और आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। कुछ मामूली नुकसान भी हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तर तथा परिवर्तन हो सकता है जो लाभदायक होगा। वाणिज्य-व्यापार से सम्बद्ध सभी कार्यों में आप अच्छा करेंगें। सहकर्मियों तथा सहायकों के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। दशा की प्रगति के साथ-साथ स्थिति में सुधार होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के कार्य में परिवर्तन होगा। आप आपने कार्य में परिवर्तन या अन्य आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं जो अन्ततः लाभदायक होंगे। आपका उपार्जन तथा लाभ अच्छा होगा। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग तथा बौद्धिक कार्य कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

पारिवारिक सुख और वाहन की दृष्टि से यह दशा आपके लिये उत्तम होगी। आपको जमीन-जायदाद या ऐसी अन्य सम्पत्ति से लाभ होगा। आपको यातायात से भी लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा में आप की छोटी और शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आप की शिक्षा अति उत्तम होगी। आपका प्रशिक्षण अच्छा होगा और आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफल होंगे। आपकी लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षण तथा शैक्षिक सेवा आदि में रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपको रुचि होगी। आपका मस्तिष्क बौद्धिक तथा विश्लेषणात्मक होगा और सभी बौद्धिक कार्यों में आप अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा और उनसे आपको सुख मिलेगा। वे आप से दूर जा सकते हैं या उन्हें कुछ मामूली समस्याएं हो सकती हैं जो दशा की उन्नति के साथ गुजर जाएंगी। आपके जीवन साथी को हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा, उन्हें सुख की प्राप्ति होगी और उनकी मनोकामनाएं पूरी होंगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता के लिये यह दशा लाभदायक होगी जबकि आपके पिता को सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनका भाग्यादेय और यात्रा होगी तथा बौद्धिक कार्यों में उनकी रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कठिन परिश्रम करना होगा, उनकी छोटी यात्रा होगी और सम्बन्धियाँ से सहायता मिलेगी जबकि आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ मिलेगा, उनकी शादी होगी और वाणिज्य व्यापार में सफलता मिलेगी। आपका उनके साथ संबंध अच्छा रहेगा। बुध की इस दशा में आपको सुख मिलेगा, वैवाहिक जीवन उत्तम रहेगा, आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी तथा अच्छे पद की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर दशा के कारण आपको सम्पत्ति तथा सुख

मिलेगा और शिक्षा उत्तम होगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। सूर्य की अन्तर्दशा के कारण लाभ तथा विवाह हो सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य खराब हो सकता है तथा ननिहाल से लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में जीवन-वृत्ति में उन्नति तथा छोटी यात्रा होगी। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि लग्नेश शनि की अन्तर्दशा में यशा, ख्याति और सफलता मिलेगी।

दशा विश्लेषण

Mr.

महादशा :- केतु
(16/11/2044 - 17/11/2051)

केतु की महादशा 16/11/2044 को आरम्भ और 17/11/2051 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु दशम भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, विरोधियों पर विजय तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको यश ओर ख्याति मिलेगी और जीवन में प्रगति तथा लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप खुश और आशावादी होंगे। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी तथा विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, हृदय-पीड़ा, निचले अंगों में पीड़ा बुखार फोड़ा तथा अल्सर आदि हो सकते हैं। समय पर उपाय करने से इनसे बचाव हो सकता है।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। व्यवसाय-व्यापार में उपार्जन अच्छा होगा। शत्रुओं-विरोधियों पर विजय मिलेगी। सट्टा-कार्य कम करें। पिता से कुछ लाभ होगा। जीविका-व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, परिष्कृत कला, इंजीनियरिंग, सम्पर्क अधिकारी का कार्य, न्यायिक सेवा, प्रबन्धन तथा भाषा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। रत्न, विलासिता-सामग्री, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, कपड़े, रबड़ तथा प्लास्टिक आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्य स्थान में अनुकूल परिवर्तन आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आपको वरिष्ठ कर्मचारियों का अनुग्रह तथा सहकर्मियों-सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों के जीवन में प्रगति, आय में वृद्धि तथा लाभ और व्यापार का विस्तार होगा। आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी और साझेदारी में लाभ होगा। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और बड़ी दोनों यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे। आपको परीक्षा

तथा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। भाषा, दवा, प्रबन्धन, इन्जीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि होगी। आप कूटनीतिक और स्नेही हैं और आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी। समाज सेवा में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की विरोधियों पर विजय और कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। उन्हें आपकी सहायता की जरूरत हो सकती है। आपके जीवनसाथी को सुख, जमीन जायदाद में वृद्धि और कुछ परिवर्तन होगा। आपकी माता को साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी जबकि पिता की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और उनके साथ अचानक कोई घटना घटेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ और हानि और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या होगी जबकि बड़ों के आवास या व्यवसाय में परिवर्तन, यात्रा और व्यय होगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति और जीवन में प्रगति होगी। शुक्र की दशा में बच्चों से सुख, शिशु का जन्म, सफलता तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यवसाय में लाभ होगा। मंगल के कारण जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और सगे-संबंधियों से सहायता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सफलता मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन-समृद्धि, यश तथा सफलता मिलेगी।

Ms.

महादशा :- केतु
(31/03/2052 - 01/04/2059)

केतु की महादशा 31/03/2052 को आरम्भ और 01/04/2059 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु अष्टम भाव में है जहाँ से उसकी दृष्टि द्वितीय भाव पर है। उसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रह थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध की दशा में आपको अप्रत्याशित धन, सभी प्रकार का लाभ, जीवन में परिवर्तन तथा मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या, अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ और हानि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपको कुछ समस्या हो सकती है। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी, आँख की पीड़ा, चर्मरोग, गठिया, जननांग से संबंधित बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सावधानी बरत कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको कुछ अप्रत्याशित आय हो सकती है। आपको विरासती सम्पत्ति, बोनस, ग्रैच्यूइटी और सेवा-निवृत्ति से लाभ मिल सकता है। व्यापार-व्यवसाय में अच्छा लाभ हो सकता है। सट्टे और लेन-देन में साधारण लाभ होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए इन्जीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, वायु सैनिक के कार्य, दवा, बौद्धिक कार्य, अनुसन्धान-कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। किताब, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, रत्न, समाचार पत्र, पत्रिका आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। सहकर्मी और अधीनस्थ कर्मचारी कठिनाइ उत्पन्न करेंगे। आपका मामूली परिवर्तन संभव है। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार हो सकता है और आपके लक्ष्य की पूर्ति होगी।

वाहन, यात्रा जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको आराम मिलेगा। आपकी एक सुन्दर गाड़ी होगी। सम्पत्ति का लेन-देन लाभदायक सिद्ध होगा। शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप शोध कार्यों में अच्छा करेंगे। आपको अपन स्तर बनाये रखने तथा परीक्षा और प्रतियोगिताओं में सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा, लेखन, मीडिया, लेखा कार्य आदि में आपकी रुचि होगी। आप बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चे प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा में अच्छा करेंगे और आपको उन पर गर्व होगा। आपके जीवनसाथी को यश, ख्याति और पहचान मिलेगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की जमीन-जायदाद में वृद्धि और समृद्धि तथा सफलता मिलेगी जबकि आपके पिता को सभी प्रकार का लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ होगा और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़ों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यात्रा और उच्च शिक्षा होगी। उनके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा, व्यवसाय में वृद्धि और वाणिज्य-व्यापार में लाभ होगा। शुक्र के कारण खर्च, लम्बी यात्रा और साझेदारों से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्मान की प्राप्ति और जीवन में प्रगति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में यात्रा, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और आय तथा समृद्धि अच्छी होगी। राहु कुछ बाधा उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सम्पत्ति मिलेगी जबकि शनि के कारण कुद परिवर्तन, यात्रा और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में

लाभ, मामूली स्वास्थ्य समस्या और परिवर्तन होगा।

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2026

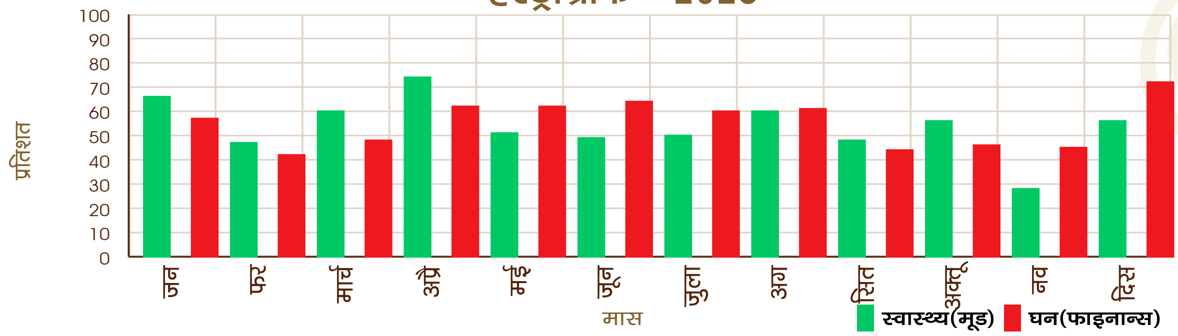

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2026

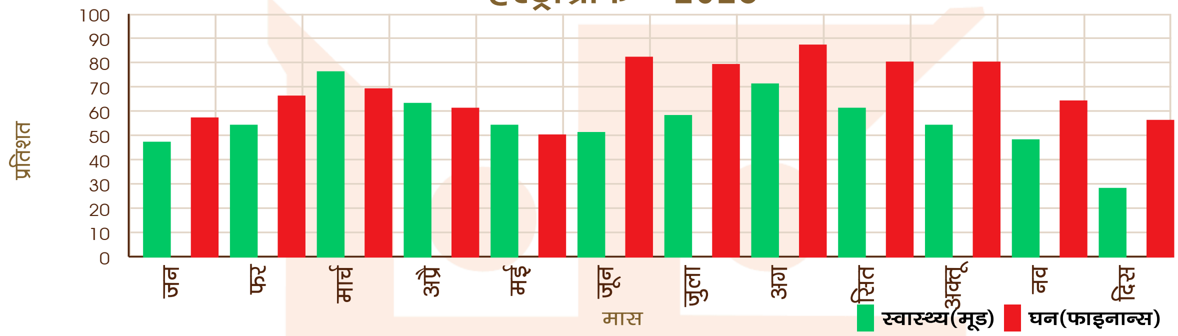

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2027

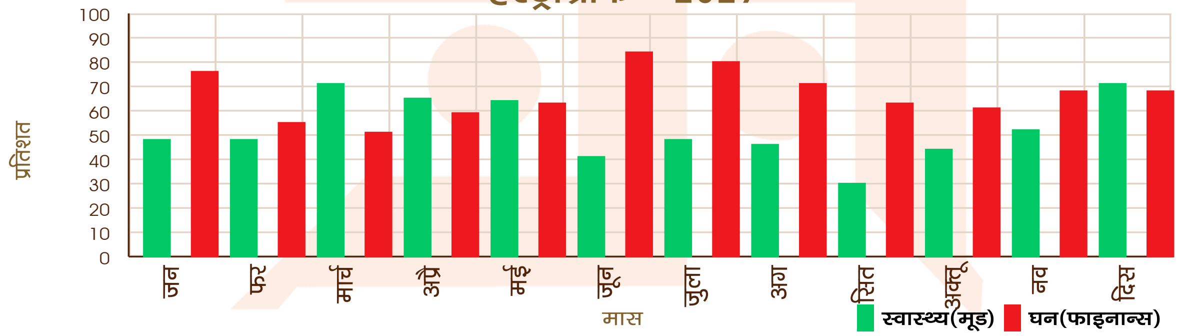

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2027

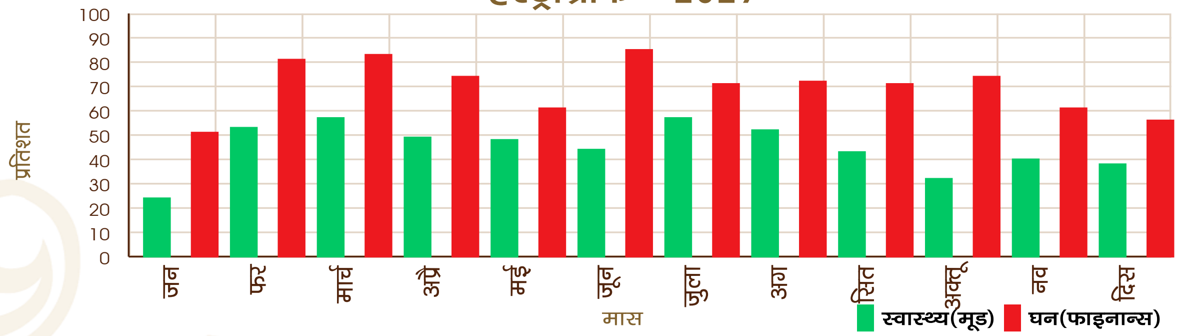

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Mr.
एस्ट्रोग्राफ – 2028

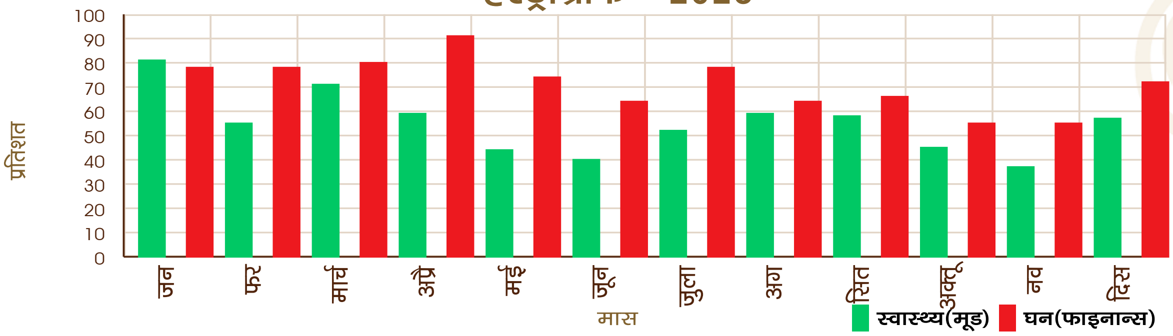

Ms.
एस्ट्रोग्राफ – 2028

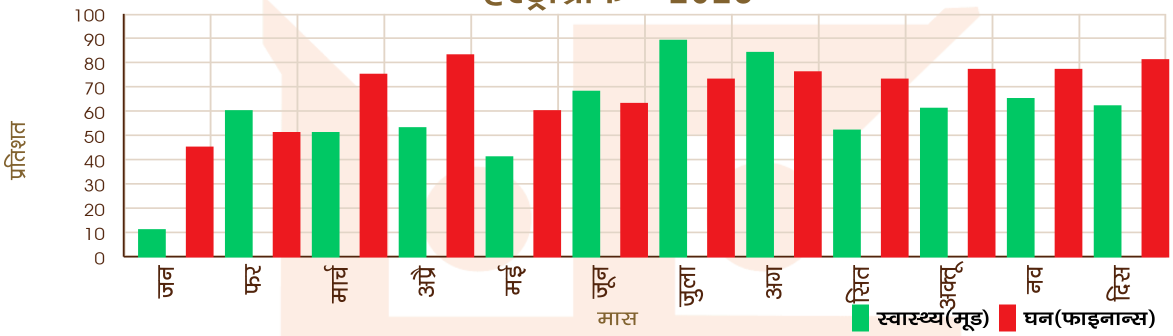

Mr.
एस्ट्रोग्राफ – 2029

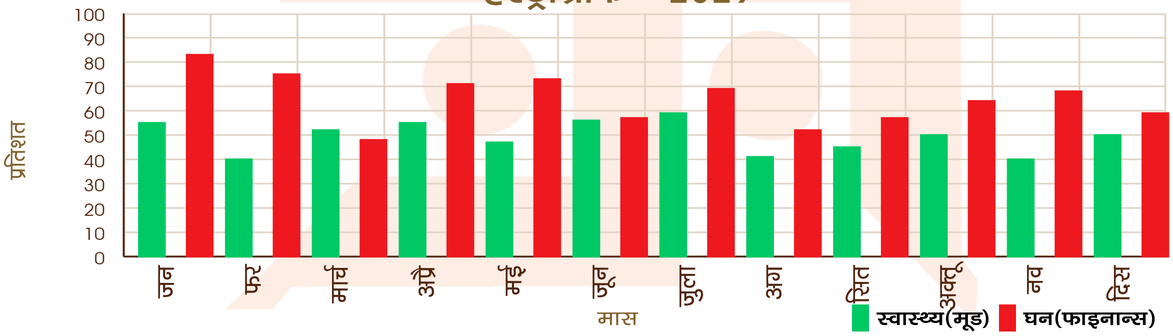

Ms.
एस्ट्रोग्राफ – 2029

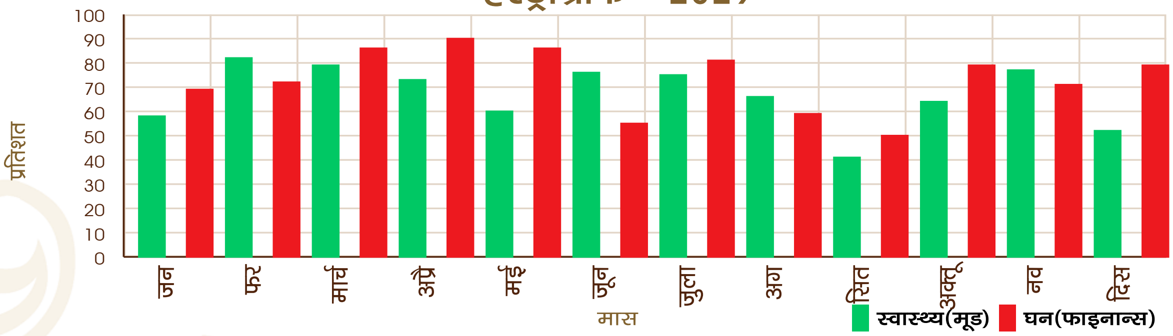

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2030

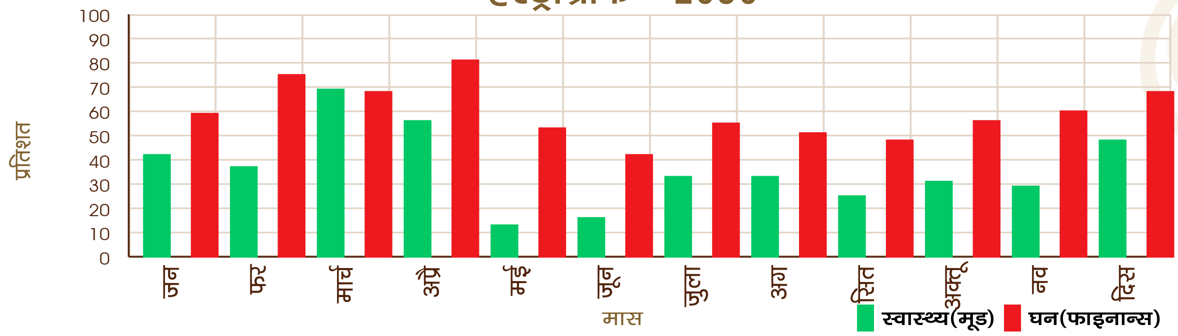

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2030

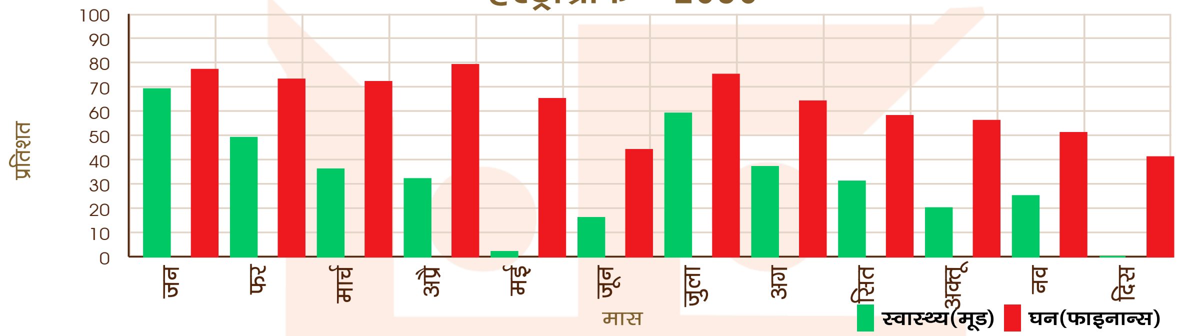

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2031

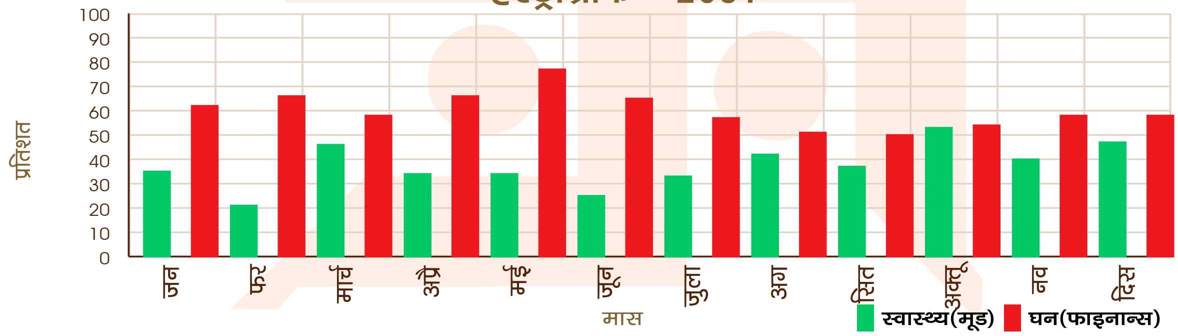

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2031

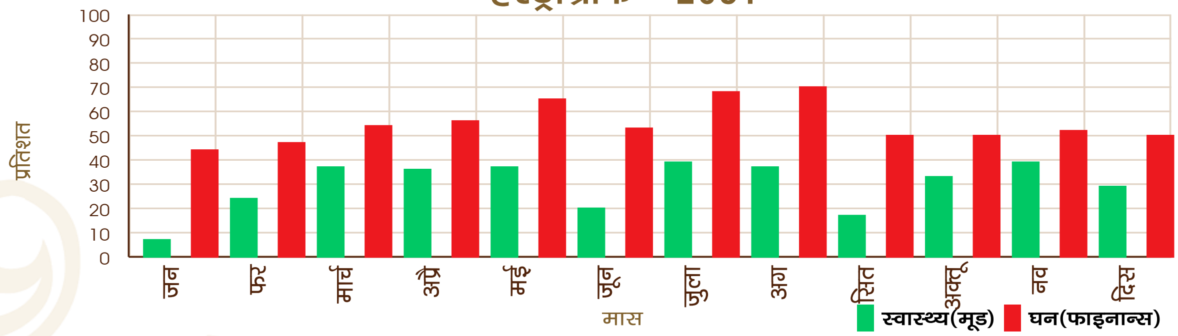

Mr.

एस्ट्रोग्राफ - 2032

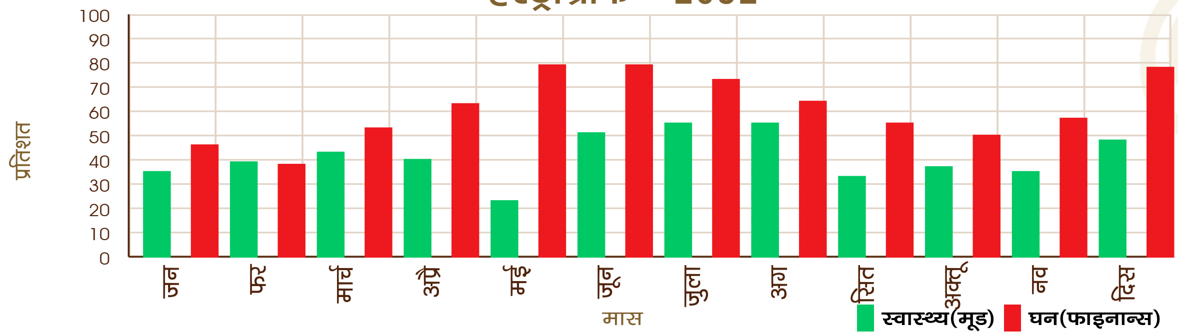

Ms.

एस्ट्रोग्राफ - 2032

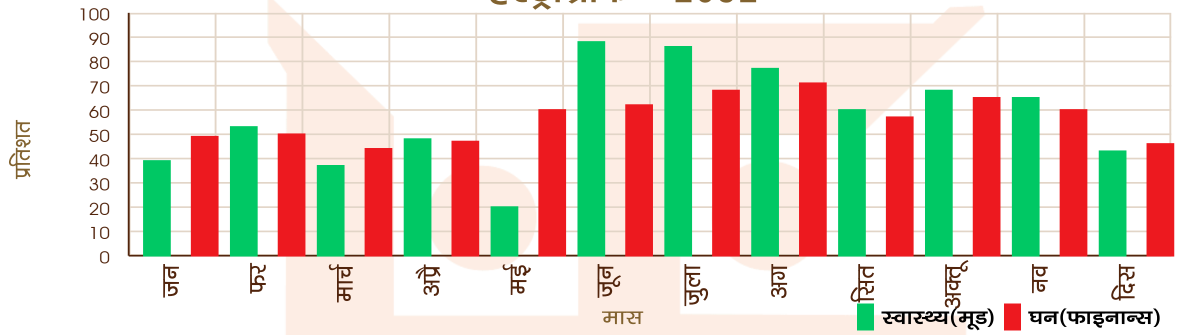

Mr.

एस्ट्रोग्राफ - 2033

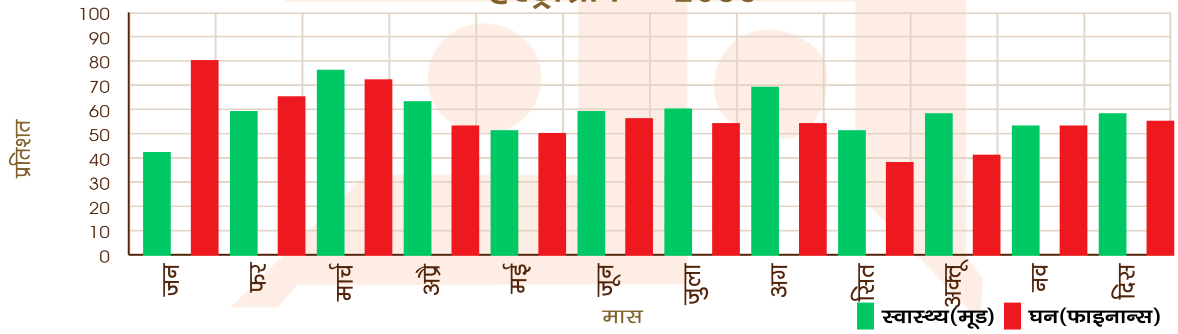

Ms.

एस्ट्रोग्राफ - 2033

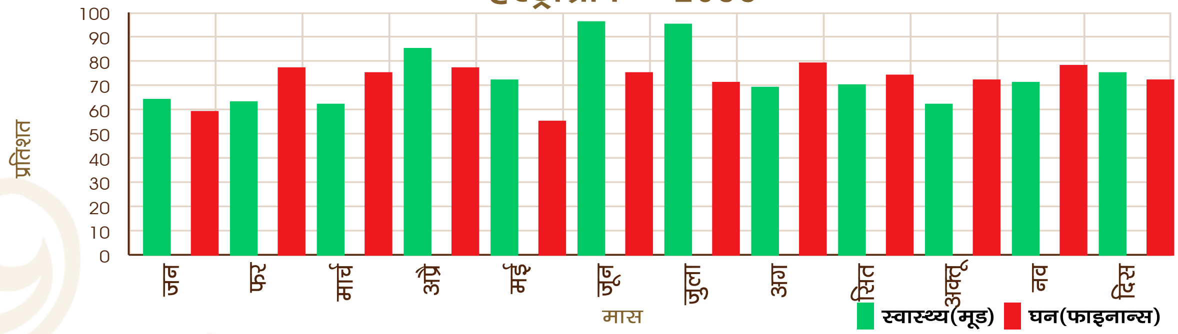

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2034

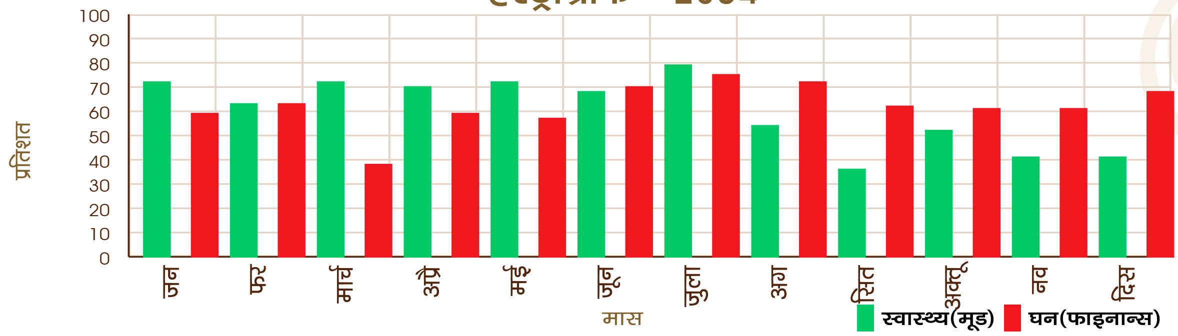

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2034

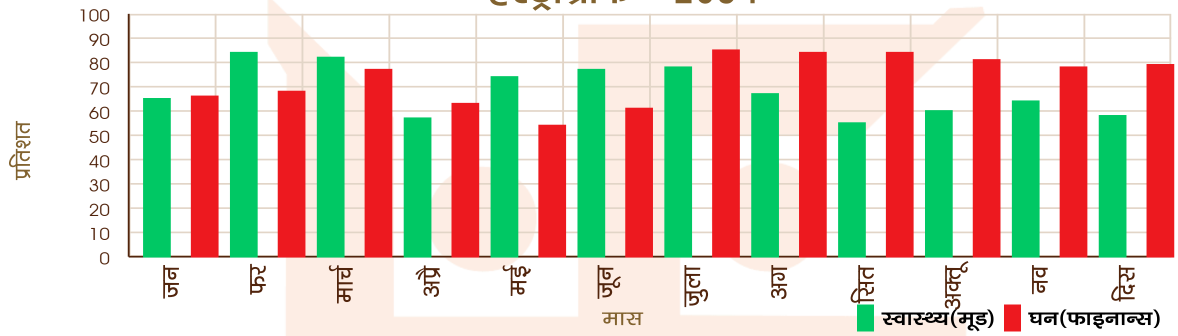

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2035

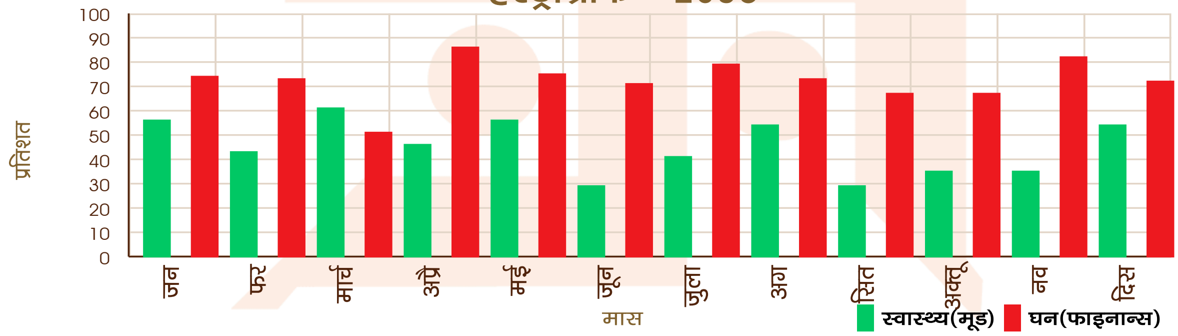

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2035

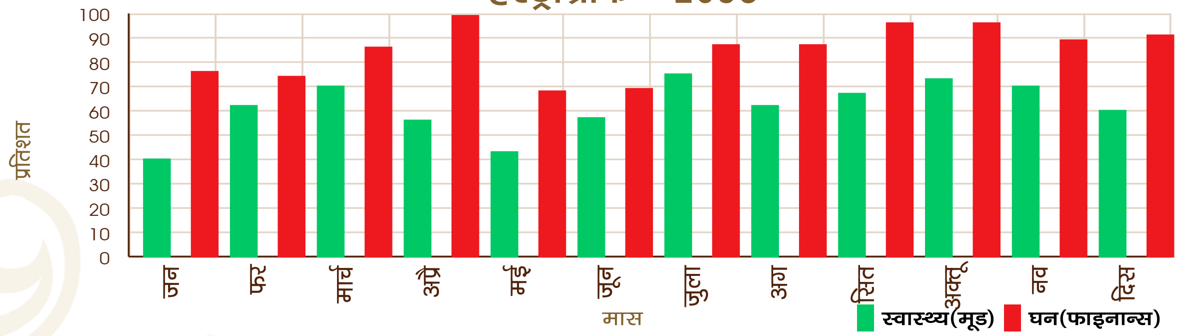

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Mr.
एस्ट्रोग्राफ – 2036

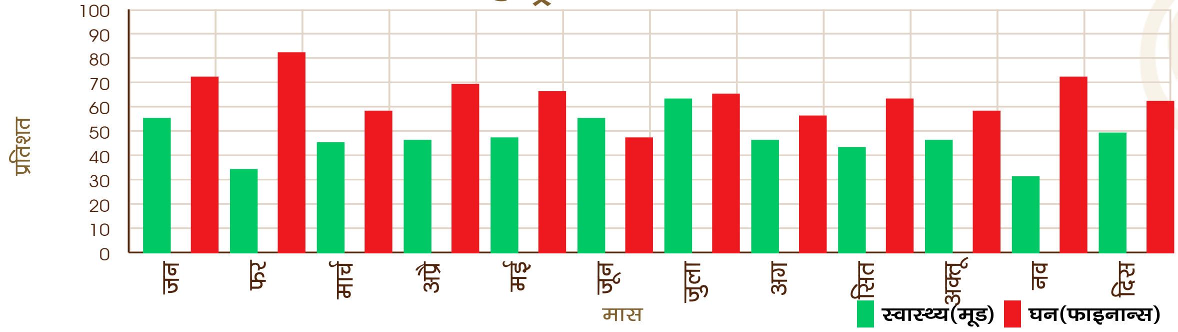

Ms.
एस्ट्रोग्राफ – 2036

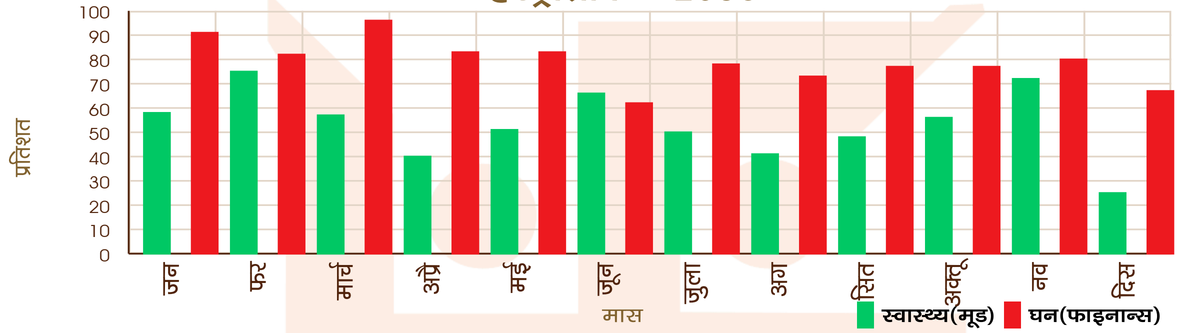

Mr.
एस्ट्रोग्राफ – 2037

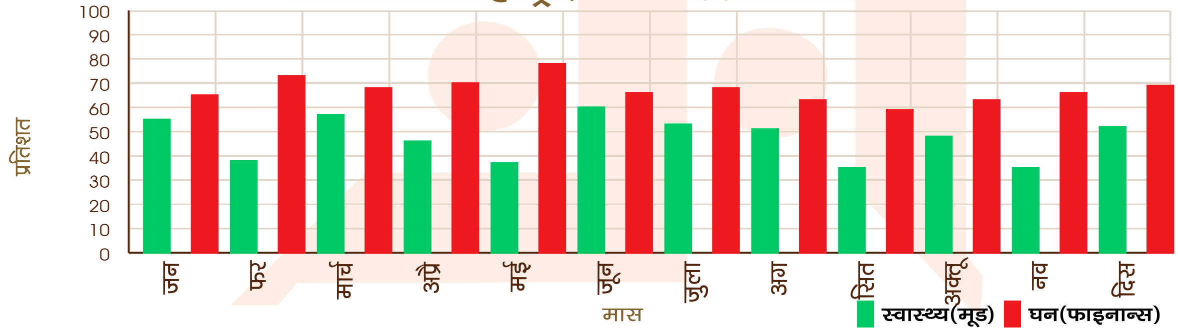

Ms.
एस्ट्रोग्राफ – 2037